गा दिन बीत भयो अँधियारा। पाखिनसँघ सोखीनबसियारा॥
हंस सो आन बैठि उपराहीं। दूसर और कोऊ तहँ नाहीं॥
नित कह शब्द चलाई बाता। सुनौ मीत निस ठाकुर राता॥
देखौं जैस अहै उजियारा। पै जो उदास कौन दुखमारा॥
क्षणयक मैं जो बैठ्यों पासा। अहै उदास सो करौं प्रकासा॥
पंखिन कहा कौन गुन अहई। जो मन टूट सँवारन कहई॥
यहि कारण सब नगर उदासा। तिनकरचरण जोकरौंहुलासा॥

दरपन टूटा संवर सक मन टूटा कब एक।
को यहिलायक जगतमहँ मोहिंसकै जोटेक॥

सुन पांखी सब अहै अपारा। पै यह जोग कीन्ह करतारा॥
जेहिते मूंद गई बिकसाऊं। सो तुमते मैं वरणि सुनाऊं॥
चीनम चीन जो देश बखाना। आलमशाह तहां सुल्ताना॥
तेहि घर अहै जवाहिर बारी। का वरणी जस दई संवारी॥
जस वह धुनि है जग उपराहीं। तस यहिपर दूसर कोउनाहीं॥
तेहिकर कथा कहूं यहि पासा। पै मलीन तब होय हुलासा॥
जेहिकर नावँ संत सुख होई। तेहिपायेकस हुलसि न कोई॥

सुनि यह बातें प्रेमकी उठी नेक डर खाय।
पंख दिवानी छिपरहै देशन अधिक चराय॥

तेहि दुख छांड़ि भानु सुख माहां। तो इनसो उदास कस काहां॥
लोग सबै यह सोच वियोगी। पुनिकस होयहोय जबयोगी॥
यहिमें रहौं सुबोख सँभारी। करौ न देश हमार उजारी॥
कहा शब्द कहे पंख सयाना। केहिके साथ जगत बौराना॥
कंवलकलाल शाह होय जोगी। राह गये सबै देशके भोगी॥
परीके काज गयो केहि देसा। गयोकुसंग सो मीत सुपासा॥

मात पिता कोउ संघ न लागा। अन्तफिराहोय शब्दसोभागा॥
कांपो तुम सो जोग सुनि जान जगत सुखभोग।
कहां भोग यहि दीपमहँ कहां मीत कहँ योग॥
सुनु पांखी जिन बोउ अंगारा। यहिविधि चतुर दासका मारा॥
जोगी यक कतहूं से आवा। फूलमती की बात सुनावा॥
सो यह सुनिभा प्रेम वियोगी। जोगी संगचला होय जोगी॥
जाय पड़ा बीभा बन माहां। तब बटपार लीन्ह पुनि ताहां॥
उन वीरन दोनों धर मारा। दुइ जीवनते वहगयो विचारा॥
सोतो चहेसि हंस का कीन्हा। जाउठि बेगि मरम तो चीन्हा॥
कहा शब्द असमोहिं न जानो। पुरुखी पुरुष होय जो ज्ञानो॥
अन्धगिरो चेला दोऊ दोऊ गनो मय प्रान।
सुत प्रेम जिन्हतन नहीं कयसेवार नेरान॥
को गा प्रेम पंथ महँ मारा। पंथ अपार जाय लै पारा॥
प्रेमगाथ जस भयो वियोगी। प्राणमतीके कारण जोगी॥
मधुकर राव देश तज दीन्हा। पाटमती कारण तव लीन्हा॥
माधो शीश क्षत्र पति भारी। क्षत्रकला कर भयो भिखारी॥
यक यक कठिन पड़ी औगाहा। जगत बोर उन पाई थाहा॥
अंधीबाव अगिनि और पानी। पड़े शीश उनहीं पै जानी॥
कोउ नहिं मोहन का हो मारा। जेहि भा प्रेम भयो सो पारा॥
प्रेम कहा तुम जानहू वे सब भरम के माथ।
जेहिभा प्रेम सो पारभा जगत वोट औगाथ॥
सुना जो हंस जवाहिर केरा। उठा चौंक औ चहुंदिशि हेरा॥
को पांखी अस अहै सयाना। प्रेम कथा कर करै बखाना॥
आवा धाय सो खोल केंवारा। और पांखियन कीन हंकारा॥

बैठी शब्द हाथ पर धाई। हुलसि यही विधि आसपुराई॥
ले पांखी बैठक पर आवा। पूछै लाग जौन मुनिपावा॥
केहिकर लिहेसि जवाहिर नाऊं। है केहि वरण बसै केहि गाऊं॥
जेहिरे मुनि भा प्राण पतंगा। वरणि सुनावो है केहि रंगा॥

लगा बाण अस नावँ सुनि अहै रूप और रंग।
पंखी वरणि सुनाउ सो मन मम होत पतंग॥

अय सुत शाह कहो यहिबाता। चीन देश जस कीन बिधाता॥
आलम शाह तहां सुल्ताना। महा पुरुष का करौं बखाना॥
तेहि घर अहै जवाहिर बारी। वरणि न जाय रूप उजियारी॥
केहि सर देउं जगत महँ कोऊ। चाँद सुरज सर करहिं न दोऊ॥
औ दोउ संग सहस दस नारी। नखतन ते बैसब उजियारी॥
चाँद सुरज कहँ लागै राहू। वह न कलंक वरणि तेहिकाहू॥
सात दीप हेरौं जग माहीं। वहिके वरण कोऊ कहुं नाहीं॥

छपन अप्सरा इंद्रकी छिपैं जगत की रान।
कोउ नहिं चौदा कुण्डमा वहिके रूप समान॥

अहै सो जोति जगत उजियारी। नानौं सन्त भाजगत भिखारी॥
बहु सुल्तान साज बरावहिं। फिर फिरजायँ उतरनहिं पावहिं॥
बहुत भये तैसे वन चारी। मिला न दरशन भये भिखारी॥
रही कैलास जो दीपक रंगा। सब संसार सो भयो पतंगा॥
तैं मोहिं पाल ज्ञान बुधि दीन्हा। नानौ शब्द ताहिमोहिं कीन्हा॥
मया करै लई मोहिं हाथा। आपन भेद कहै पुनि साथा॥
तैं मोहिं का यह लोक पठावा। सब जग फिरयौं तोहिं मैं पावा॥

अब जिन इहां बिलंभ कर चलो तो करौं मिलाव।
छांड़ सो झूंठे जगत कहँ प्रेमपंथ धरि पांव॥

सुनि सो बखान हंस मन पागा। बिरह लूक उड़के तन लागा॥
भावश मोहिं सुनत वह नाऊं। जाय प्राण दियों दै ठाऊं॥
लागा धुनै शीश पुनि माथा। प्राण देहिकर छोड़त साथा॥
सूरत आय जो हिये समानी। उपजी बिरह आग दहकानी॥
कहा कि अय सांची गुरु पांखी। तेहिमखोलेसि हियकीआंखी॥
वरण स्वरूप जैस मन देखा। नखशिख वरण जहांलग रेखा॥
मैं सपने तेहि देखा नारी। वही अहै तो होउँ भिखारी॥

नखशिख वर्ण सिंगार जो जिनलग अंग सिंगार।
हौं तेहिपर तेहि चलौं अब तजी राज घर बार॥

अयसुत शाह वरणि नहिं आवै। देखत बनै जो दैव देखावै॥
जस सिंगार वह दीन गोसाईं। वरणि न जाय अहै जहँताईं॥
हने केश भुजंगम कारे। नाग पतार जगत के द्वारे॥
शीश नाग कंवलन रखवारे। सहौं को होय जाय जिव मारे॥
झारै बाल खोल जब शीशा। तीनौं लोक अंधेर सुदीशा॥
आये पवन जो देय उठाई। उघरे सूर्य्य घटा पुनि जाई॥
बांधि केश नहिं जाय बखानै। जगके प्राण तहां अरझानै॥

जानहिं कंवल सुवास का चढ़ा जो शीश सो अंग।
लहरैं भरा सो देखिके कांपत उठा लसंग॥

तेही मांग जो दीन्ह सँवारी। रैन मांझ दीपक उजियारी॥
जस घन महँ दामिनि चमकाहै। तस वह मांग शीश उपराहै॥
जनों कसौटी कंचन रेखा। जनों सरस्वति यमुन म देखा॥
जानौं पंथ खड्ग की धारा। दुष्ट चलै नहिं पहुंचै पारा॥
तापर पूर धरे गज मोती। रहै न ज्ञान सो देखत जोती॥
जानौं पुष्प कंवल उपराहीं। खंजन तापर खेल कराहीं॥

जेहिपर परसन होय विधाता। सो देखै वह दरशन राता॥
सो अबला नारी सुभग चढ़ा सोहागनसंग।
को साधै तप जीव पर जो बिलसै वह संग॥
तेहि पर दुइज ललाट उजेरा। तीनौ लोक उजेर घनेरा॥
सूरज शशि उजेर जग माहीं। तैस ललाट केर परछाहीं॥
ऐस ललाट जो दई सँवारा। सूर लजान कहा शशि तारा॥
वह सो ज्योति जगत उपराहीं। दूसर ज्योति और अस नाहीं॥
तेहिपर लड़ विकसन की आई। जनौ नखत शशि पंथ अथाई॥
रहै न ज्ञान प्राण तेहि केरा। जस सो ललाट जगत तन तेरा॥
अहै गुप्त कोउ लखै न पारा। पै सब लोक अहै उजियारा॥
जग महँ छाई किरन सब ज्योति मांझ कैलास।
तपसी थकित जगत के बैठ सो तेहिकी आस॥
भौहैं धनुप कहूं जस बांकी। बचै न प्राण सहौं जब ताकी॥
जा दिनते वे चढ़ी कमाना। सब संसार सो भयो निशाना॥
जितने पुरुप दई संहारे। ते सब वही धनुप के मारे॥
चढ़ी रहै जो बरहो मासा। कांपै सगरो भूमि अकासा॥
ऐसा धनुप और नहिं कोई। गगन धनुष देखत छिनहोई॥
सिद्ध सबै तेहि शीश नवावैं। किछू उठाय न हेरै पावैं॥
निडर न होय जिन देखिकमाना। का जानै धौं केहिपर ताना॥
भौहैं दोऊ धनुष वह का कोउ करै बखान।
गगन धनुष ना थिर रहै दूसर कौन समान॥
बरणौ बाण अहै तेहि केरे। बचै न प्राण सहौं जब हेरे॥
बावर भये बहुत तेहि मारे। कै अस बाण गढ़े अनियारे॥
लागैं शीश सांग ज्यों भाला। निशिदिन करैं हिये महँ साला॥

जेहि जेहि हिये बाण वह लागा। जीवते बचा तो भा बैरागा॥
रोमन रोमन मांख सब बन्दे। पंख पंख पांखी तिस फन्दे॥
सोउते सोवत जो आवहिं आंसू। होय न नीक घाव भा तासू॥
सगरो जक्त बेध वह कीन्हा। अबलौं औषध काहु न दीन्हा॥

बाण वही वैसे कठिन और न दूसर बान।
नीक न भा जेहि लागियो जबलग देयन प्रान॥

नैन दोऊ जस समंद हलोरा। लहरैं लेवैं भरैं झिकोरा॥
लहरैं फिरैं तरंग उठावैं। स्वर्ग पताल सो एक मिलावैं॥
बोहित श्याम पड़ी तेहि गाहीं। पड़ी भँवर दोउ भावँर खाहीं॥
अंजनि श्याम जबै वह रोई। चितवन एक जगत हर लेई॥
तजेसि प्राण जो देखै योगी। करै भिखारि जहांलौं भोगी॥
तेहि डर हेरि सकै नहिं कोई। जो हेरै पुनि फिरै न सोई॥
अस नाटक नट नैन कराहीं। रस भर दीन्ह लीन्ह रस ताहीं॥

रतनारे पर विष भरे चितवै जेहि की ओर।
टोना डारे पढ़ मनहुं लीन सो प्राण मरोर॥

कहैं नासिका जिन है दीनी। बदन संयोग दया वह कीनी॥
खड्ग बाण पै खड्ग न होई। तौ न बाण जेहि बरण न कोई॥
टोंट सुआ पै टोंट न होई। वह सो कंवल सर करै न कोई॥
शुक सो नासिक देखि लजाना। का परबत पर कीन्ह पयाना॥
अधरामय सर मुक्ता डोलै। जनवर आदि सब करैं कलोलै॥
तेहि दामिनि मुक्ता उजियारा। चन्द्र लजान कहै को तारा॥
भूला भूल जगत अस करी। क्षण कर बास जंग मग धरी॥

पवन लोभाना ताहि पर नित पहुंचावै बास।
खन आवै जावै खनै क्षण यक तजै न पास॥

अधर अमोल एक रतनारे। बीरी दीन्ह अधिक रंग भारे॥
लाल छिपान मनौं तन माहां। राति अमीन सो लौंके छाहां॥
गहे मीठ सोहा दिन राती। बोले वचन शब्द यहि भांती॥
अमृत देय अधर वह राखा। होय सो अमर जो पावै चाखा॥
सब जग वह कर आशा करई। मग कर लिये बास पुनि लेई॥
को जिव देय औ साधै योगू। जेहि पावै अस अमृत भोगू॥
केहिकर भाग दई अस कीना। जो अस चहै अधर रस लीना॥

राती अधर पिव कहै रस राजी रंग तंबोल।
प्राण दिये पावै नहीं अहै सो अधिक अमोल॥

दाड़िम दशन कहूं केहि भांती। रतन लाग जनौं पांती पांती॥
चुनि चुनि रचे दिये बैठारी। अतिअमोल हीरा चमकारी॥
बोली बिहँसि बात जो कामिनि। अचरजलौंकैशशिमादामिनि॥
केहि सर देउँ दशन महँ लाई। तीन लोक कोइ सर न कराई॥
दाड़िम हिये फाट भहरानी। बीच लौंक फिर गगन समानी॥
रैन मांझ जेहि खन मुसकाई। चहुंदिशिलौंकज्योतिअसजाई॥
धन वह सखी जे सेवा माहीं। रहैं कोटि खेलै बिहँसाहीं॥

रतनारे रंगन रचै वरण न आवै लेख।
मुख देखत कछु थिर नहीं बिहँस सके को देख॥

रिसान कहूं मीठ मन बाता। जानौ झरैं फूल मुख राता॥
फूल दुपहरी जस रतनारे। तैसे झड़ैं बोल मुख प्यारे॥
कोकिल जबहिं सुनत वह बोला। एक शब्द दोउ जगकर मोला॥
ज्ञान ध्यान की बातैं करई। जानौं प्रेम हिये भर रहई॥
चारिउ वेद भेर यहि माहां। ज्ञान अथाह को पावै थाहा॥
एक शब्द तिहुँ लोक पठावै। चारिउ जग कोउ अर्थ न पावै॥

एक वंचन वह पूछे कोई। जाने भेद ओ पंडित होई॥
अमृत वचन सोहावना जासो भेद अमोल।
भर के दे वह प्रेमरस जब बोले वह बोल॥
कहौं कपोल विमल रतनारे। फूल कँवल दुइ दई सवाँरे॥
सोहैं कोमल वरण कपोला। रस भौंहैं अस दोउ अमोला॥
तेहि कपोल बायें तिल बैठा। देखत धाय हिये महँ पैठा॥
मनहुं कँवल पर भँवर लोभाना। बैठि अचल वह तजै न थाना॥
तेहिपर गोल लटक लटआई। घुँघुरावल जिव लेत लोभाई॥
अमी कपोल काल तेहि केरा। विषधर डसा सहूं जेहिहेरा॥
तिल विरहा तन आग लगावे। लट नागिन सो डस बौरावे॥
फूले कँवल कपोल पर भँवर बैठिकर ईठ।
रहेप्राण क्यों बीच गढ़ जेहि परैवह दीठ॥
सरवन सीप कहौं जस लोने। रचे अनूप दीप दुइ कोने॥
जानौदई सो हाथ सँवारी। पहिरे पात नखत उजियारी॥
जस उड़ि गुंजै गगन के पाहीं। तैसे पात नखत चमकाहीं॥
मानौ कस मोतिन कर लागा। ऐसा वृक्ष देखिदुख भागा॥
करन फूल डोलैं तेहि लोने। जनुकौंधा लौकै चहुंकोने॥
गंगन माहिं नखत विलगाहीं। दिन औ रात चैन सो नाहीं॥
कबहूं छूट परे जो बारा। मधु अंधियार करें चमकारा॥
सीप न सरवर सरकरै पातन नखत लजाय।
नखत छिपाने दिवसमहँ देमुसदान विलाय॥
कहौं सो ग्रीवा भाषौं केरी। वन मयूर भागे तेहिहेरी॥
रहे सुभाव बाद बकलीन्हे। मनहुं तुरंग बाग बस कीन्हे॥
लंक परेवा की वह बानी। अहे अधिक को सकै बखानी॥

अति निरमल वह दई बनाई। पड़गइ लीक पान जो खाई॥
गिरयो मयूर कालतेहि कीरा। छिन छिन डरै न बांधे धीरा॥
तेहि पहिरै कंचन कंठ माला। चहै सो फन्द प्रेमकर घाला॥
को तपसी व्रत साधे जेहू। जो हियरे वह लागै केहू॥
कीन्ह जो चतुर चितेरपुनि गिरयों मोरकर भाव।
काजानै करतार धौं केहिले करै मिलाव॥
वरणौं भुजा कँवल की नारी। कँवल कंधतें सुभग सँवारी॥
वरण अनूप सो महा सोहाई। मनहुं चक्रपर भँवर भवाई॥
सोहै अधिक जो कनक कलाई। डोलत भुजा लौंक दीनाई॥
भजन भाव जस वरणि न जाई। वहिकर करम न लेत लोभाई॥
कँवल फूल तस दोनों हाथा। औ मेंहदी राची रंगराता॥
अँगुरी पहिरत कनक अंगूठी। जगकर प्राण लीन्ह तेहिमूठी॥
भय तेहिसे अँगुरी रतनारी। मनहुं रकतमहँ बोर निकारी॥
मूंगफली अँगुरी सबै रकत बोड़ रतनार।
जानो हियरा खोलके लीनेसि प्राणनिकार॥
उरअति सुभग अनूप सोहाई। फिर अमृतकी बाग लगाई॥
जेहि सोनार सो सांचै गढ़ी। मूरत रतन कनक महँ मढ़ी॥
ऊपर चीर पहरि हिय नारी। फूलरही जानौ फुलवारी॥
कसे अंग कंचुकि हिय चोली। कछु अतितरे रहै तस खोली॥
इन्द्र अप्सरा सबै छिपानी। केहि सर देउँ जगत वह मानी॥
प्रेमभरा वह सागर हिया। तापर नग सोहैं जस दिया॥
तौनहिये अब भरा वियोगू। चहै सो कीन्ह कलहुं संयोगू॥
प्रेमभरा हियरावही रूप रतन की बाग।
हिये लगावे कौनधौं हैंधौं काके भाग॥

कुचनारंग दोऊ उपराहीं। सो अमृत दूसर कोउ नाहीं॥
लागे फर अमृत वह बारी। निशिदिनरहै सखिन रखवारी॥
कँवल कली दोउ जोबन बासा। भँवर लोभान न छोड़ै पासा॥
एक पाट दुइ देख्यों राजा। श्याम छत्र दोनों सिर छाजा॥
सो जग महँ अमृत वह दोई। अहै अछूत छुआ नहिं कोई॥
मन छिपान जनौ कंचुक माहां। पवन प्रवेश न पावै ताहां॥
सब संसार करै तेहि आसा। को यहि योग जो पावै बासा॥

को यहि जोग नवावही जोबन कोर तुरंग।
उमंग रहे हियरा तेही चहै जो यहि कर संग॥

उदर सो बाट काम पुर केरी। चीनै इन्है पड़ै रूप हेरी॥
निरमल रीति प्रीति भर आई। पेट पीठ सों कीन्ह मनाई॥
अति सुकमारि पान असवारी। पान फूल के रहै अधारी॥
नाभ भंवर जानौ जल माहीं। तैसे नाभि पेट उपराहीं॥
तापर हलुक रुमावलि आई। पांति पपल अमीन तव जाई॥
फूल बास ते जाय अघाई। रहै ठढ़ धौं केहि बलपाई॥
वदन सुवास फूल वह बासा। तेहि में रहैं बहुत तेहि पासा॥

सुरति पियारी प्रेम अति वदन महा सुकुमार।
जानौ तरवर मीत का लचै फूल के भार॥

कहौं सो लंक अंग जस कीन्हीं। दूसर दई न काहू दीन्हीं॥
चीन्हते जान अहै दुइ आधी। केहिविधि चलै ठाढ़ सत बांधी॥
केहरि सिंह हारि पुनि चीता। सबकी लंक नारि वह जीता॥
लंक भृंग केरी जस कीन्हीं। तेहिमें अधिक दई वह दीन्हीं॥
लंक कहैं तेहि अति सुकुमारी। जग महँ और न दूसर नारी॥
हारे हिये सो जगत चितेरा। लिखि नहिं सकैं रूप तेहिकेरा॥

जस सिंगार में देख्यों सोई। यहि संसार न दूसर कोई॥
निरख न आवै लंक हिय निरखत वह बिलखाय।
सहै न भार संभार यह अभरन ते लचिजाय॥
वरणो जांघ सुभग जस नारी। कदली खम्भतें अधिक संवारी॥
दोनों एक सांच गढ़ काढ़ी। देखत बने होय जब ठाढ़ी॥
रूप वरण पै रूप न होई। कंवल सुभग निरमल वै दोई॥
जानु संयोग सोहावन फीली। तेहि पहिरे फिर और नंगेली॥
रतन जड़ी गुजरी रतनारी। पांव धरत चमकै उजियारी॥
राते पांव पावरी राती। पड़ी न भूमि पांव रस माती॥
पायल बाजै पायँन शोभा। जेहिके शब्द जगत सबलोभा॥
दुलहिन नित बैठी रहै सखी सहस दै साथ।
जहँलग राखै चरण वो सखिन धरैं तहँ माथ॥
चाल गयंद चलै मद माती। प्रेम भरे पग धारहि राती॥
हंस चकोर न पांव उठावै। दूसर कौन चाल अस पावै॥
चाल गयंद देखि बन हारा। तेहि में शीश चढ़ावै छारा॥
दूजे पांव जो पायल बोलै। स्वर्ग दूत मानो महि डोलै॥
चरण उठाय जबै वह राखा। उठैं राग छत्तीसो भाखा॥
सुनिकै जगत मोहि सब गयऊ। धरनी स्वर्ग ताहि बस भयऊ॥
हुलसि उठी धरती तेहि ठाऊं। जिन्ह सो धरै कंवल वह पाऊं॥
जहां जहां चलि पग धरै उठै छत्तिसो राग।
मोहि इंद्र सो शब्द सुनि जगत भयो बैराग॥
सो वह जाति न जाय बखानी। कौन सकै वह किन पहिचानी॥
रहै गुप्त भीतर कैलासा। तपसी बहुत भये तेहि आसा॥
हेरै चहा सो आप हेराना। फिरा न कोऊ वहीं भुलाना॥

सुनि सुनि रूप सो जक्त बखानै। पै वह भेद कोऊ नहिं जानै ॥
मैं सो रह्यो जगत वह संगा। बारे तें देख्यों सब अंगा ॥
दे मोहिं पाल सो वेद पढ़ावा। दये पांख सब लोक पठावा ॥
अब जो भई सुजोग सयानी। रहै वियोग भरी कुंभिलानी ॥
तौ सुतजानि सो हिये महँ लखौं अहै सो भाग।
पैतो भोग हुलासि सो सहै निकसि वैराग ॥
सुनि सो किरनि सुरतिमन बासी। कियो मोहिभा प्राणउदासी ॥
मनमहँ आयसो जोति समानी। तनभा आग आगभा पानी ॥
जीकी विरह उठी धुन्धकाई। जरा सो लोक पड़ा मुरझाई ॥
कामिन पास जवाहिर बासा। तन मन छूछ सांसभइ नासा ॥
शब्द तबै भइ कामिन भेसा। बैठि शीशधरि कोऊ सुदेसा ॥
तब लग प्राणपिंड महँ आवा। उठा चेतपै चेन हेरावा ॥
उमंड नीर सो आवा आँखी। उड़ा सो प्राण परेवा पाँखी ॥
नैन खोल देखा जबै तबहीं जोति हेरान।
रोयउठा बालक तहां कहां पड्यों मैं आन ॥
उठाचेत जन बाउर रोवा। ज्ञानजरा सगरा गुण खोवा ॥
कहा के अय पाँखी करज्ञाना। वही बखान जो कीन्हबखाना ॥
कहां सो मुरति सुरतिजेहिलागी। कहां सो पान बुझावै आगी ॥
अबतन विरह आगते जरै। कहां सो नीर जो शीतलकरै ॥
मैं यहि दीप जो रह्यों भुलाना। अबचलअन्त जहांमोहिंजाना ॥
जहां बसै वह प्राण अधारा। तहांचलौं विधिलावै पारा ॥
परगट भई आदि जो बीती। चलौं सँवर तुम प्रेम पिरीती ॥
अबभा प्राण पतङ्ग मम सुनत दीपका नांव।
लैचल पंखि सयानि मोहिं प्राणमिले जेहिठांव ॥

सुन सुरशाह प्रेमकी बाता । कठिन प्रेम दुख सहै न गाता ॥
कठिन सो विरह वज्रकी आगी । बचै न प्राणहिये जब लागी ॥
बाचै खड्ग सिलह के मारे । बचै न आग विरह के जारे ॥
कठिन जो आग खड्ग चमकाहीं । विरह आंच तेहिते उपराहीं ॥
पड़ै न प्रेम फन्द महँ कोई । जीवदेय पुनि छूट न सोई ॥
पड़ि कै फन्द सबै सुखलूटे । मोहिं जियत वह फन्द न टूटे ॥
सो मन अपने करहु विचारा । कठिन प्रेमकी पंथ अपारा ॥

कठिन समंदर प्रेमका अगम असूझ अपार ।
सो सुनि हंस न भूलियो राख्यो चरण संभार ॥

मनसोकठिन अधिकअकुलाना । पुनिफल प्रेमसोकठिन बखाना ॥
मोहिंछट प्रेम न भावै दूजा । देवँ सो प्राण पंथ वह पूजा ॥
जिव सुनिगयो जवाहिर पासा । पुनितन लागिरहे केहिआसा ॥
अबहीं चलौ डारिगेरे कंथा । लैचल पांखि मिलै जेहिपंथा ॥
तू मम गुरूभयो तुव चेला । वेगिचलौ चाहौंजेहि खेला ॥
निहचौ तजौं राजघरबारा । प्रेमपंथ का करौं विचारा ॥
वही सो जोति सुरति मन भावै । मरन जियन मोहिं शोचनआवै ॥

भाठाढ़ा जम्म बावरा सुमिरि जवाहिर नांव ।
चलो पांख वह मारगे जेहि पहुँचौं वहिठांव ॥

देखा शब्द चला फँद तोरी । तौ बिनवै लागी करजोरी ॥
सत्यबात सुन प्रेम वियोगी । तोहिं सुतविरह मिलैवह भोगी ॥
पै वह देश अहै शठदूरी । मारग कठिन विषम दुखभूरी ॥
बिचबिच विरहविपिनअँधियारा । कठिन मेर औ समुद अपारा ॥
बीतैं जगत बरष दुइ चारी । तबलौं दुखित होय वह बारी ॥
मोहिं बिनकोउते बात न बोलै । करै न भोग अधरनहिं खोलै ॥

सो मैं देखि यहां चलि आई। करो विलम्ब जाय कुम्हिलाई॥

प्रथमजाय मैं ताहिपर कहौं सो प्रीति तुम्हारि।
वहि सचेतकर आवहूं तब लैचलौं संभारि॥

सुनि सो बिलम नयन भरिआये। कसमोहिंचलतविलंब सुनाये॥
जो तैं करसि बिलँब तहँ जाई। मैं केहिभांति मिलौं तहँआई॥
अब सो वचन भयो तो भारी। कैसे रहौं मैं जगत भिखारी॥
जो तुम लिह्यो प्राण मम हाथा। तन बिन प्राण प्राण तो साथा॥
प्रथम किह्यो दासन जहँताईं। धरयो जो शीशचरणजेहिठाईं॥
लै रस वचन वेगि चलि आयो। असनकिह्योजोविलँबलगायो॥
नहीं तो प्राण रहतनहिं राखे। जानत आप कहा मुख भाखे॥

प्रथमै वरण्यो प्रीति सब और अर्थके जोर।
आयसु होय जहां कहूं प्राण देवँतेहिखोर॥

ऐ सुत शाह सोच जनि मानो। मोहिं दासी आपनि कै जानो॥
सात दिवस मारग गइँ देखो। जो न फिरौं तो औगुन लेखो॥
सातै दिवस मांझ मैं आऊं। लाऊं पत्र औ जाय मिलाऊं॥
अब मोहिं सोच अहै वहि केरा। दिये न प्राण जो होय अँधेरा॥
कहि यहि वचन सो पांखउड़ानी। कै गइ भोग नींद की हानी॥
हिये सोच भा बादर सोई। घर बाहर नहिं भावै कोई॥
निशि दिन ठाढ़ मनावैं नारी। उठै न छांड़ि ठांव फुलवारी॥

नींद गई हरिनयनते भूंख प्यास गे छूट।
रोवैं नारी पुरुष सब रूम लियो जनु लूट॥

हेरत पंथ हारि गइ नारी। पीर हिये जिनकेर डहारी॥
शब्द वियोग सोग भयकारी। कहै न भेद सो गुप्त उघारी॥
जागै रैनि पंथ नित जोवै। खाय न भोग गुप्त मन रोवै॥

तन वियोग भांवर चढ़ि आई। कमलकली मनो आग लगाई॥
कहां सो मोरि प्राण पियारी। कौने दीप रहै उजियारी॥
भय अधिराति ठाढ़ पछिताई। खन आंगन खन भीतरजाई॥
मग जोवत बीते दिनराती। समुद्रमांझ जस सीपसुवाती॥

ठाढ़ी व्याकुल अटापर चख चकोर भै रैन।
हिरदय घेरा दुख कठिन आंसु ढरैं दोउनैन॥

तैस वियोग शब्द जो आई। जनो तपनमहँ जललैधाई॥
कामिनि होय फिरी जब सारी। हियरे लागि मिलीं दोउ नारी॥
बैठे पाट दोऊ यक साथा। पूंछै लाग बात गहि हाथा॥
कहो शब्द आपन सँग कोई। मैं बिन तोहि रहौंनित रोई॥
तोरे संग गयो जो प्राना। मग जोवतनिशिकरौं बिहाना॥
एक छांड़ि तोहिं भयों अकेली। दूजे डाह जो देह सहेली॥
निशिदिन मोहिं सुनावै ब्याहू। होय अधिक हेरेमन डाहू॥

चहूं कि प्राण नसाउँनिज रहूं सो मोरसंभार।
छार भयो जरिहीयरा बदन भयो जरकार॥

शब्द कहा कब सुख है मोहीं। जबलग सँग न मिलाऊं तोहीं॥
जबते छांड़ि कियों तोहि गोई। विष भोजन भा गा सुखखोई॥
पै करि खोज कियों यहिभांती। कबहुं न सुख सोयों दिनराती॥
सात दीप यहि कारण धायों। पियों न पान भोगनहिंखायों॥
अन्त जो जम्बू दीपै आयों। देश देश सबही तरिधायों॥
पायों जाय रूम के माहीं। वहजगभानुजगत वह छांहीं॥
जस तुम चांद सूर्य्य तसपीऊ। देख्यों तबै छकित भा जीऊ॥

सातदीप घरघर सबै हेर फिरयों जगछान।
अन्त मिला नेरे सोई जबै पड़ा पहिचान॥

अहै सो रूम शहर के ठाऊं। मोहन रूप हंस है नाऊं॥
यहि जगमहँ दूसर सुल्ताना। नहिं पहुंचे वाहिके कोउज्ञाना॥
सहसों कला वरण सब पूरा। कोटिन गुण निर्मल सो शूरा॥
लक्षण बत्तिसौ ३२ देख्यों अंगा। पग्यों रंग बैठ्यों तेहि संगा॥
मन्दिर गयो परेवन संगा। देखौं ताहि दिवस कर रंगा॥
निशि पंखी संग कियो बसेरा। तबलव हंसकीन्ह तहँ फेरा॥
मैं पंखी तें चाल्यों बाता। वहतो नावँ सुनतभा राता॥

रातामा तो नाउं सुनि उठाचित्त बैराग।
बैठा मोहिं सो साथलै मैं सँवरा तो भाग॥

बैठा मोहिं लीन्हे निशिमाहां। पूछै लाग तोहि है काहां॥
मैं तुम्हरा जो कीन्ह बखाना। सुनतकँवलहोयभँवरलोभाना॥
यकसपना देखा कहुँ राती। पूंछै वरण अहै केहिभांती॥
भये जो सपना देखि उदासा। परघट सुनतकाल असडासा॥
मुर्च्छि पड़ा बैठक उपराहीं। टेक्यों तबहिं लियेंगहिबाहीं॥
वहिकर प्राण सो तुमपहँ आवा। भा बावर सब ज्ञान हेरावा॥
चलापन्थ गर कंथा डारी। मैं आयों वहि छांड़ि भिखारी॥

आयों यहांभिखारिकेकँवलदये जो पान।
नाहींहोतविलम्बमोहिंकलपदेयजोप्रान॥

सुनिसो सिसा प्रीति तेहि केरी। गयहोय मौन दरशकी चेरी॥
परघट उठी कँवल विहसाई। हिरदयप्रीति उठी धुँधकाई॥
कहा शब्द अबका तोहि देऊं। पिवके चरण नयन परलेऊं॥
प्राण मोर अब होत परेवा। केहिविधिचलौंकरौं वहिसेवा॥
मया करौ जो मोहिं उड़ाओ। बन्दिकाटिमोहिंकंथमिलाओ॥
औ नहिं जाय मिलौंहोय दासी। काहेक दुखसाधौं सुखवासी॥

वहिकर दुख मैं जाय मिटाऊं। का कसकरौं पड़यों बनपाऊं ॥
लैचलशब्दउड़ायके मोहिंवहदरशदिखाव।
गये सो प्राणपयानके बेगिसो आनमिलाव ॥
सुन धुनितो अस चित्र सयानी। रहतेहिभांति परस नहिंजानी ॥
हौं तो अकेल ज्ञान बल होहीं। जो गंहिउड़ौं चलौंले तोहीं ॥
जो दूसरि मैं परी बोलाऊं। सुनै पिता मैं रहै न पाऊं ॥
तेहिते रहौ बांधि मन धीरा। औमोहिं देउ रहसके बीरा ॥
जबलौं कंथ मिलै तोहिं आई। तबलौं देउ न प्राण गंवाई ॥
मात पिता जो रच्यो बियाहू। दिह्यो उतर नाहिंमान्यो काहू ॥
धन लक्ष्मी तेरे मुख गोई। तुम्हें मेट करै कस कोई ॥
प्राणदीन्ह जब पीवका लाज देत का होय।
बोलौलज्जाछांड़ितुम साजसके कितकोय ॥
तब धन टेक पड़ी लय पाऊं। तुमतो जाव बेगि वहि ठाऊं ॥
मैं तो यहां प्राण पिय हाथा। मरौं तो साथ जियों तो साथा ॥
दूसर मोहिं कौन लखि पाई। लखै कंथकी प्रानहि जाई ॥
अबहूं वह सुमिरन की आसा। पिव दरशनकी मरौं पियासा ॥
जायकह्यो पयतैं गति मोरी। अहय दुखी बिरहिन वह तोरी ॥
विलँब न करें चले पिव आवैं। विरहकालते मोहिं छुड़ावैं ॥
नयनन मांझ चरण दै लेऊं। हिरदय मांझ ठाउं दैदेऊं ॥
पिवदरशनकी आसकहँ प्रानरहत तनमाहँ।
नाहिंतोजातअलोपहोय रहतकहांवनमाहँ ॥
उड़ाचहत जो सबधन बेली। सुनतहती यकऔर सहेली ॥
सुनत उठी माता पहँ जाई। सोवत मातहि जाय जगाई ॥
देखौ चलि सो आप निहारी। आज सबद है काके द्वारी ॥

होय न यह मानुष तव चेरी। होयपरी आजहि मय हेरी॥
रहै मन्दिर महँ मानुष भेशा। फिरै पवनहोय देश विदेशा॥
कौन्यों देश साहु सुत कोई। ताहिसंदेश कहय पुनि सोई॥
तेहि सुनि भै बावर तो बारी। वेगिसँभारि औ लागिगोहारी॥
अबहिं लिये गहे चीरवहु ना कहुंजाय उड़ाय।
यकदिन कँवल उदासहो आगिनगर महँलाय॥
सुनत बात माता उठिआई। ऊपर मंदिर कँवल पहँ आई॥
देखे दोउ बैठे यक पासा। प्रेम भरे औ प्राण उदासा॥
परखि स्वरूप कँवल वहिकेरा। मन उदास जानौ दुख घेरा॥
लीन्ह उठाय हिये महँलाई। पुनि समभ्काय फेरि बैठाई॥
तब गहि लीन सबध की बाहीं। आई लय मंदिरके माहीं॥
पूंछय लागि बात निरधाई। कहो सत बात कहांते आई॥
को तू अहसि जासि केहि देशा। केहिकरआनसो कहससंदेशा॥
बारि सिखावसि औगुणें जासि कहा केहिपास।
सत्यना कइसितो जारहूं मैंतोहिकरौं निरास॥
जो तुम कहो मात का मोरी। अहौं सो दासि जन्मकी तोरी॥
मैं छट दास और नहिं जानौ। औगुनकरौं न मुखमहँ आनौ॥
सेवा करौं सदा कर जोरी। दूसर काज और नहिं मोरी॥
करिसेवा वह कियो हुलासा। लागी मोहिं बिठावन पासा॥
देखि न सकैं और सब चेरी। बैरी भई रहै नित मेरी॥
तैं चेरी मोहिं मारन चहा। गुण का औगुण करदैं कहा॥
जो उनकहा वही तुम जाना। औगुन मोर कहां पहिंचाना॥
मैं औगुण जानौं कहा बारि वयस पुनिमोर।
अमृत महँ घोरयँ विषै यह दासी सब तोर॥

कैसो सबब न भेद बतावै। सहसभिको तेहिआपदिलावै॥
तब तिरिया रहे अधिक रिसाई। कर भिभकोर फेर बैठाई॥
प्रथम चीर छोड़ कय लीन्हा। दूसर औ पहिरन कहँ दीन्हा॥
पांवन बांधि जंजीरैं डारी। औ हथकड़ी डार बैठारी॥
मूंदिस तहां न जानै कोई। औ पुनि चीर दीन्ह तेहिखोई॥
पड़ी जो सबबमांझ बंदिखाना। चीर गयो गुन सबै भुलाना॥
रोवै कर मींजै पछिताई। कामैं कीन्ह भयों का आई॥

वहां घरखोयों भानुकर यहां चन्द्र कर प्रान।
कोअंबआग बुझावही पस्योआन बंदिखान॥

सबब जो आनपड़ी बँदिखाना। भा भिनुसार जवाहिर जाना॥
भामिनि दुःख दुखित तन दूना। उमड़े आंसू औ शिर धूना॥
अब मम प्राण गयो बिन मारे। मुयों सो मात पिता के जारे॥
रोय सखी कहँ बेगि पठाई। मांगी आपन सबब छोड़ाई॥
सखी सो आय कहा जहँ माता। अधिकोआग उठी वहिगाता॥
मारि सखी कहँ बेगि पठावा। औ मारे कहँ भरम सुनावा॥
सखी सो आय कहा समुझाई। कितमांगौं अब सबब छोड़ाई॥

जियत जीवनहिं छांड़ई जबलग लये न प्रान।
का औगुन धौं देखिके दीन्हेसि वह बंदिखान॥

सुन बँदिखान सूखगै बारी। थकगा ज्ञान बोल मुख हारी॥
मनकी बात रही मनमाहीं। छुटिगा प्रान हाथजिवनाहीं॥
करै लाग अपने मन ज्ञाना। कै ममभेद गुप्त करिजाना॥
किन माता ते जाय चेतावा। किन बैरिन वह बंदि करावा॥
अब बिन सबब को जाई ताहां। पीतम प्राण बसै मम जाहां॥
को मम जाय संदेश सुनाई। को पीतम कहँ आनि मिलाई॥

अब मोरी को पुरवै आसा। गयो प्राण तन मम पिव पासा॥
यही सोच धुनि बिरहिनी हरै ज्ञान मुख बोल।
चातृकप्रान बियोग भा पिवबिन सकै न डोल॥
प्रीतम प्रीति पियर भइ गाता। शोकभरी मुख आव न बाता॥
दिन दिन अंग जो सूखनलागी। भोग बिलास भयो सब आगी॥
परघट करै न बोलै बयना। दुःख हृदय जल बरसै नयना॥
जहां ठाढ़ सो तहँवां ठाढ़ी। जानौ प्राण लीन्ह कोउकाढ़ी॥
छूटे बार तो छूटे रहैं। टूटे हार तो टूटे रहैं॥
सखी सबै बैरिन असलागीं। दीन्ह पान जानौ तन दागीं॥
घरका रहन भयो बनभारी। फूलन सेज कांटभइ सारी॥
पल पल जारै हियेमहँ रोय रोय बिलखाय।
नींद न आवै पल छिनौ जागत रैन बिहाय॥
यक निश रोई बैठ अकेली। सोयगईं चहुँओर सहेली॥
तनमन रटन वही धुन लागी। सुलगसुलग दगधै तनआगी॥
सुमिरै कंथ नांव हिय माहीं। चितवै वारपार कोउ नाहीं॥
सुमिरि सुमिरि मन करै अँदेशा। कस वह देश कंथ जेहिदेशा॥
कहँ करतार करै यक ठाऊं। कहँ ममभाग जो टेकौंपाऊं॥
कहँ अब सबध जाय वहिपासा। कहँपिवमिलै जो पूजैआसा॥
पंथ अपार जान मन हारी। रोवत मुर्छ पड़ी वह बारी॥
मुर्छपड़ी धन बिरहिनी रटत नांवसे माथ।
सो सपने धुनि शब्दमय दृष्टिपड़ी जोनाथ॥
जो सुमिरत सोई मन माहां। तूने खोजरही पुनि ताहां॥
सपने महँ जो देखै नारी। आयो कंथ मांझ सो नारी॥
जैस सबध ते सुना बखानौं। तैसे आय गया जस भानौं॥

करमन मोह छकित बलिहारी। दीपक पर पतंग भय मारी॥
हरपित धाय पड़ी लै पाऊं। अंचर टेकि ठाढ़ि भय ठाऊं॥
पूंछे सकुच नांव औ देशू। तुम सुल्तान की अहो नरेशू॥
तुम अपना सब भेद बतावहु। जरतअगिनसों बरसबुझावहु॥
कहो नाम तुम आपनो कहो बसो ज्यहिदेश।
सुमिरन करों सो हियेमहँ पठवों तहां सुदेश॥
सुन धन नांव को हंस हमारा। जन्म भूमि सो बलख बुखारा॥
अब मैं अहौं रूमके माहां। खोजै मोहिं सो पावै ताहां॥
तुमधनकहौं सो भेदअपाना। केहिगुणअहौ सो व्याकुलप्राना॥
कौन बिथा बीती हिय तोरे। जेहिते खोज पड़यो तुममोरे॥
नांव ठांव पूंछौ सब गोरी। और कहो जो इच्छा तोरी॥
जो तुम कहौ करौं मैं सोई। जेहिते मन आनँद तो होई॥
केहि गुन अहौ जु हिये उदासा। मैं अब ठाढ़ अहौं तुम पासा॥
कहो भेद धन आपनो जो मन करौ उदास।
सोतुम सुमिरो हियेमहँ अहौं ठाढ़ तुमपास॥
तब धन बिहसि कहा फिर भेंटा। भा ममकाज कीन्ह तोय भेंटा॥
नांव तुम्हार सुनत मन मोही। जीवते अधिक मैं पायों तोही॥
इच्छा यही अहै मन मोरे। पांवर भई रहौं संघ तोरे॥
चरनन घाल कंथ मोहिं राखो। औ दासी मुख अपने भाखो॥
औ ममकंथ गहो तुम बाहां। तब यह प्राण रहैं घट माहां॥
करो न पगते अब मोहिं न्यारी। राखो संघ जनु दासी नारी॥
देखत रहौं नित्त मैं तोही। छुट यह सबध और नहिंमोही॥
दरश हेरान्यो तन महँ प्रान अहै तुम हाथ।
मारो चहै बिछोह दे चहो लगावहु साथ॥

सुन धन जस चाहै तू मोही। तेहिते अधिक चहौं मैं तोही ॥
जस तुम लागि रहौ मम आसा। तस मैं रहौं सदा तुम पासा ॥
जस तुम ध्यान धरो हिय माहीं। तस मैं तोहिं बिसारौं नाहीं ॥
पै जो प्रीति चहो धन मोरी। दूज पुरुष देख्यो जन गोरी ॥
दूजे काज न दरश दिखायो। दूजे केर सेज नहिं जायो ॥
दूजे के जन बैठो पासा। दूजे तें जन किहो हुलासा ॥
दूजे का जन बात सुनायो। दूजे संग जिन रंग रलायो ॥

दूजा बास न देखियो आयस चहो जो मोर।
तब आउब हम पास तुम प्रीतिगांठ पुनि जोर ॥

सुन मम कंथ मैं दासी तोरी। छुट तो नेह और नहिं मोरी ॥
आप मैं खोय मिलौं तुमपाहीं। दूसर कौन लखैं परछाहीं ॥
तुमते कंथ नेह मम लागा। औटमिल्योजसकनकसोहागा ॥
मिलौं तुम्हें समुद्र होय मोती। मोती प्राण कंथ तुम जोती ॥
तुम सरवर हौं कंवल की गोई। तुम बिनप्राण और कित होई ॥
तुम जगभानु चन्द्र होय नारी। तुमरी जोति रहै उजियारी ॥
हौं धन फूल बास तुम पीऊ। तुम बिन नारिहोय बिनजीऊ ॥

मन मोरा कंचन विमल औट मिला तुममांह।
सो मोहिं कसौ कसौटिपर खेयलिह्यो अबनांह ॥

सुनि यह वचन लीन हियलाई। भय धुनि सबद्ध प्रशन यह पाई ॥
औ कर टेक सेज बैठारी। तबलौं जाग पड़ी वह नारी ॥
पड़ी चौंक सेज उपराहीं। देखै कंथ सेज पर नाहीं ॥
खुलगये नयन बिछुड़ि गे पीऊ। लखि वह रूप लोप भा जीऊ ॥
उठि बैठी लागी पछिताई। मन मानिक कितगयो हेराई ॥
अबहीं कंथ कंठ मोहिं लाई। मैं पापिन रसपगे न पाई ॥

कहां जो होय सुफल फिर राती । कहँ पिउ मिलै फेरि यहिंभांती ॥
कहँ गइ रैन सोहावनी भोर भयो केहि काज ।
मैं पापिन कस जागहूं बिछुड़ि गयो सरताज ॥
भा अतिशोच बिरह धुनि केरी । निरखै रूप मिलै नहिं हेरी ॥
पिव अपुहि मा अहै समाना । ओहट भयो आग दै प्राना ॥
सपने कंठ कंथ के लागी । बावर भई सोय जब जागी ॥
हेरै रूप दृष्टि नहिं आवै । तौलो लागि सो आप हेरावै ॥
सुमिर रूप मुख अमृत बोला । तोड़ै हार औ अभरन चोला ॥
व्याकुल भइ थरथर हो कांपी । लहर चढ़ै कोउ लेय न चापी ॥
गिरी अचेत भई तन छारा । छिटकी मांग छिटकगय बारा ॥
डसै काल धन बिरहिनी पिय बियोग मतखोय ।
धाय सखी सब चहुँदिशा मर्म न चरचै कोय ॥
सखी जो धाय गई लिपटाई । रोवत गहि बिन प्रान उठाई ॥
का करतार कीन्ह निशिमाहां । कै हरिलीन कंवल मुखछाहां ॥
बैठीं सबै थांभ तेहि कोरा । लागीं बायु करै चहुं ओरा ॥
छिड़कैं तन चंदन औ पानी । उठी आग शउ जाय झुरानी ॥
सुनते माय तहां चलिआई । रोवन लागि हिये मां लाई ॥
देखि अचेत सब रोवन लागीं । मंदिर नारि सबै सुनि जागीं ॥
पूंछै सखिन कहा तुम कीना । कै मम कंवल कली हर लीना ॥
चरचैं सखी सयानि सब हरषि बिथा औ सोग ।
एको मर्म न पावहीं कित औषध कित रोग ॥
सखियन हारि कहा सब कोई । हम यह मर्म न जानै गोई ॥
जबतें सबध पड़ी बंदिखाना । तबते यह दुख रोग तोलाना ॥
जो वहिकहँ बंदि छोड़ मिलाओ । तौ कुछ मर्म रोग कर पावो ॥

तब मातैं वह बेगि बोलाई। धाई सखी सबध तब आई ॥
आई सबध कंवल के तीरा। देखि बिथा उमड़े दृग नीरा ॥
बैठी माथ टेककर बोली। बिरहिन छुवत चेत चखखोली ॥
देखा सबध बैठि है पासा। उठी चेत भै जीवन आसा ॥

चेत मनहिं ब्याकुल तनै हिये घाव सो लाग।
भई चेत परघट तबै गुप्त वही अनुराग ॥

जो भय चेत बैठ धन नारी। मुख धोवैं पूंछें सब बारी ॥
कांस मांह कंवल दुख भयऊ। तेहिते मंदिर सोग होयगयऊ ॥
पूंछैं सबै नवेली बाता। चलैं आंस औ कांपैं गाता ॥
प्रीति छिपान जान कोउपावै। सबै कहैं जेहिका जस भावै ॥
कोइ कहै कुछ देखि डरानी। कोइ कहै कछु भर्म्म भुलानी ॥
सखी कहैं पुनि रोग न कोई। सबध मिले दुखगा सब धोई ॥
रहै देव सबध पुनि साथा। पै वह चीर देव जनि हाथा ॥

ब्याकुल बरन सो ठगगई रूप बरन गा मेट।
चरचै सबध सयान सो भै सपने कहुं भेट ॥

आलमशाह मँदिर महँ आवा। धन पियते असबात जनावा ॥
कस तुम भूल रह्यो सुख भोगा। घर महँ बारी ब्याहै योगा ॥
जियत हुलास देखि सो लीजै। बेगि बियाह बारि कर कीजै ॥
कह सुल्तान बिलंभ हम काहीं। जबलौं चाह ध्यान ते नाहीं ॥
यही बचन कहि आयो बारा। बैठि पाट जग भेंट जुहारा ॥
ततक्षन कोउ देशके नेगी। पत्र लिये पहुंचे तहँ बेगी ॥
शीश नवाय पत्र सो दीन्हा। और उदास कहा सो कीन्हा ॥

बांची पत्री हाथलय लिखा सो जक्त हुलास।
आज अहै सो कालनहिं बोले मंत्री पास ॥

कहै सुल्तान विलंभ का मोरी। जगमा जियन आशहै थोरी॥
जौन काज कीन्हे फल होई। तेहिका विलँभ करै कितकोई॥
पंडित सबै जो बेगि बोलाये। लगन धरी औ दिन अरथाये॥
पंडित दिवस लगन धरि दीन्हा। गांठिबांधि नेगिनका दीन्हा॥
लिख दिनपत्र सो बेगि पठावा। आप नेवत सबदेश बोलावा॥
फिरा जो नेवत सबै जगजाना। गांव कटक सगरो अरकाना॥
जहँलौ मीर राव औ राजा। घरघर लाग होन जगसाजा॥

लगन धरी राजा जबै न्योत फिरा चहुँपास।
रावरंग घरघर सबै दोउदिश भयो हुलास॥

दोउदिश बाजी अनँद बधावा। जब राजा घर मांड़व छावा॥
हुलसै चीन कोटि घर बारा। रतन जड़ाऊ बार सँवारा॥
हाट बाट चहुँओर हुलासा। सुख आनँद छायो चहुँपासा॥
नगर देश सबही चलि आवा। घर बाहर सब बाजि बधावा॥
राते बरन छाय चौपारी। राते बरन पुरुष औ नारी॥
भा हुलास सब सखी सहेली। गावैं व्याह करैं सब केली॥
नखत हुलास जो गावें व्याहू। चांद गहन लाग्यो जस राहू॥

घटघट भयो हुलास पुनि रचा अनन्द बियाह।
वहिकर मर्म न जान कोउ कीनचहै धौं काह॥

मात पिता जो रच्यो बियाहू। कंवल हिये उपजा दुख दाहू॥
गइ तन सूख फूल असवारी। उठी आगतन भा ज्वर कारी॥
लगी प्राण रोय सर धुनी। काकिन होय कहा गुनगुनी॥
परी सो धाय सबध के पाऊं। सुनौं न और पुरुष कर नाऊं॥
बिपदे मोहिं खाय मरजाऊं। अब केहिभांति तजौं यह ठाऊं॥
तुम जानौं मैं केहि की नारी। को दूसर मोहिं सकै निहारी॥

अब जिव दै पिय पास सिधारौं। अस नैहर सासुर दोउ जारौं॥
प्राण देउँ मैं पीत्र कहँ जगत लई सब छार।
आग लगै अस मांड़वै जरै सकल संसार॥
सुन धन को राखै अब तोहीं। पै तुम छांड़ि मरो कस मोहीं॥
दिन दश प्राण रखौ तुम गाता। जबलौं आवै बारि बराता॥
होइहै मंदिर माहँ जो भीरा। तब मैं खोज लियों पुनि चीरा॥
पावौं चीर तो लाऊं गोई। तोहिं लै उड़ौं देउँ दुख खोई॥
जो मोहिं चीर न देय बिधाना। देवैं प्राण तौ देखि बराता॥
जरिगे वह पंडित अस ज्ञानी। जिनबिनलगनलगनअसठानी॥
मैं तोहिं साथ तबै मरिजाऊं। लाऊं आग जरौं यहि ठाऊं॥
प्राण देउँ जेहि कारने को यह कहै सँदेश।
देखौं प्राण सो मिलैं कब केहि गुरुकर उपदेश॥
तबतो हंस पंथ तहँ हेरा। की पांखी फिर कीन्ह न फेरा॥
लै गइ प्राण फेर नहिं आई। केहि कारन भूली धौं छाई॥
की वह प्राण कीन्ह नहिं पाया। की वह छांड़ दीन्ह मम दाया॥
गई लोभाय निठुर बैठायस। दीन्हस डाह न दरश दिखायस॥
अब केहि संग जाउँ वहि देशा। पहुंचूं पंथ पार केहि भेशा॥
को मारग ले पार लगाई। को अथाह मां थाह दिखाई॥
अब यह प्राण निछावरि देऊं। साजों योग पंथ वह लेऊं॥
पांखी गई न फिर फिरी बिलँभरही वह देश।
है को मीत जो ताहि सुन कहै बियोग सँदेश॥
उठा बैराग लाज बुधि खोई। देखा मीत न जग में कोई॥
दीन्हिस फेंक शीश ते पागा। कीन्हिस टूक टूक सब बागा॥
बावर भयो छूट जग नेहा। कमलसि देह कीन्ह सब खेहा॥

भूला खेल कूद सब भोगू। भूला मित्र शत्रु सब लोगू॥
भूला वेद औ कथा कहानी। भूला लोभ लाभ औ हानी॥
भूला सबै जगत का धंधा। पड़ा जो आन प्रेम के फंदा॥
कठिन फंद गर परत न जाना। रोदन लाग जबै अरभाना॥

उठा रोय बुधि खोयके गयो ज्ञान तनं लूटि।
बिरह फंद अरभान अति गयो फंद सब टूटि॥

चला रोय सर मेलिस छारा। निकसि बाग ते आयो बारा॥
रोवत सखी सबै उठ धाईं। चरनन लाग गईं लिपटाईं॥
माता देखि भई बिन प्राना। देखत हंस हिये भर आना॥
फोरैं शीश चढ़ावै छारा। कौन हंस पर चातक डारा॥
हुइ बावर जो बाहर धाई। लूटि जाव वेदन सब आई॥
हिये लाय जो करै पुकारा। दीपक होत मोर अँधियारा॥
धाये लोग जो सुनत अयानी। देखन लाग आग मधुरानी॥

ठगे लोग सब चहुँदिशा देखि शीश पर छार।
उमड़ाना सरवर हिया चले आंस हुये धार॥

सुनतहि लोग नगर उठिधावा। चैन हिरानो ज्ञान हिरावा॥
नारि पुरुष रोवैं चहुँ पासा। बिरहबेल चढ़ लागि अकासा॥
रोवहिं मीत औ मींजहिं हाथा। होत जो जेहि जाते ममसाथा॥
आवा रूमपती सुलताना। लिये संग बहु पंडित ज्ञाना॥
लीन्हा ठीक हिये महँ लाई। हियरा फाट नैन भरलाई॥
पूंछा हंस कहां गा ज्ञानू। पढ़्यो जो चारो वेद पुरानू॥
केहिमुन शीश चढ़ायो छारा। कस खोयो यह देश हमारा॥

ज्ञानकरो तन चेतअब कहो बिथा जो होय।
मैं तन्हआप बिकावहूं आनदियो तोहिसोय॥

सुनतहिं बात अधिक भा दाहू। लखे न मीत संघाती काहू॥
चहुंदिशि लखे खोल जो आंखी। तन जस वृक्ष प्रान जसपांखी॥
कहे वचन जस बावर बोले। टूटी आस नैन जब खोले॥
छूटन चहे छुटन नहिं आवे। उड़न चहे तन पंख न पावे॥
लखि सुल्तान रहा बुधि खोई। को जगमा तिन फेरै सोई॥
मित्रन कहा बूझ मन ज्ञाना। है काहूके रूप लोभाना॥
जबलौं फेर न देखे सोई। तबलौं ज्ञान कहांसे होई॥

की सपनेकी सन्मुखे लखा रूप कहु केर।
तबलौं ज्ञान न होययह जबलौंलखे न फेर॥

तब सुल्तान उठा मन हारी। घरकी सभी हँकारी नारी॥
कर सब रूपवन्त यक ठाऊं। नगर कोट जहँवां लो गाऊं॥
जेहि निरखे मन होय हुलासा। देऊं ब्याहि ताहि वह पासा॥
लीन्ही बेग हंसकी बाहीं। चला सो लीन्हे मंदिर माहीं॥
बैठा जाय मांझ कैलासा। सखिन सो रूप बुलायो पासा॥
सखी लगीं सब करन सिंगारा। औ बिनवैं आपन करनारा॥
बरन बरन सब रूप सम्हारी। आईं निकट मनो फुलवारी॥

कीन्हीं निकट सहेलियां सभी नवेली नारि।
ठाढ़भई चहुंदिशि लिये लखे न रूप निहारि॥

देख सो रूप सखी सब मोहीं। पै वह रूप न एको सोहीं॥
लागीं करन सभी मनुहारी। जो जेहि रंग सो रंग सम्हारी॥
कोइ लै हार पहन गर डारैं। कोउ माथे हँस चंदन सारैं॥
कोइ नाचे कोइ बीन बजावैं। कोइ पुनि राम सोहावन गावे॥
कोइ गहि बांह ठाढ़ भइ नारी। हँस २ कहे वचन सुखकारी॥
कोई ठाढ़ बिहंस बिहंसावैं। मृग नैनन तीखे शरलावैं॥

ज्यों २ ठाढ़ सखी समुझावैं। त्यों २ अंग आग अस लावैं॥

डाढ़ा बिरह अंगारका केहिबिधि शीतल होय।
कहत परी नहिं रूपवह उठा समर दुख रोय॥

पुन ले शाह बैठि फुलवारी। जांची नगर केर सब नारी॥
जहंलों नार छैतीसो जाती। चढ़ बिवान आई रंगराती॥
बरन २ पहिरे पट रंगा। भांति २ के भूषण अंगा॥
चारिउ जात नारि उजियारी। आई सभी मांझ फुलवारी॥
कोइ पद्मिनि तन बास बसाई। कोइहस्नी गज चाल लजाई॥
कोइ रसरूप चित्रिनी गोरी। कोइ संखिनी हार ठगोरी॥
कोइ उमंगी कोइ बैस नवेली। कोइ भोली कोइज्ञान सहेली॥

कोइ सांवर गोरी कोई कोई सुहावन रंग।
कोइसूही कोइ नीलपट कोइभूषन अंग॥

ठाढ़ भई जो पांती पांती। निज २ बरन सभी रंगराती॥
यकतो केश शीश भौंराला। यकतो छन्द फन्द गरमाला॥
यकतो मांग कनककी धारा। यकतो बदन चंद उजियारा॥
यक तो रंगन बांके नैना। यकतो मधुर सोहावन बैना॥
यक तो सोहै बरन सहेली। यक तो उमंगी बैस नवेली॥
यक तो केसर बदन पियारी। यक तो चोवा चन्दन धारी॥
यक तो ठाढ़ि सुनावै बोली। यकतो ठाढ़ हंसै हिय खोली॥

नारी सबै सुहावनी बारि बैस उजियार।
हे रैहंस न एकहू हार गईं मन हार॥

रहीं जो नारि हार सब ठाढ़ी। घर २ प्रीति वहीं की बाढ़ी॥
गईं सब मोह रूप वै देखी। भईं बावर सब चित्र सुलेखी॥
आईं मोल लेन सुख ज्ञाना। चलीं बिकाय खोय निजमाना॥

निकसीं नारि छांड़ि फुलवारी। होय बावर सब मँदिर सिधारी॥
लखा न यह पुनि काहु किओरा। कहा चंद जेहि लाग चकोरा॥
जेहि तन बान प्रेमका लागा। का तेहि भूख प्यास रंगरागा॥
मनमें पूरि गयो पुनि सोगू। घर २ भूलि गयो सुख भोगू॥

सोग नगर छावा सबै लोग गयो बौराय।
जो देखै रोवै सोई सुनेसो मन पछिताय॥

तब सुल्तान थाक मन हारा। अब कित खोज करों संसारा॥
लागा हाथ भींज पछिताई। करों कहा केहि भांति उपाई॥
बावर गुंग न भेद बतावै। रोग छिपा न जानको पावै॥
हियरे लाय निकट बैठारा। जहँलौं मीत सु बेग हंकारा॥
सेवकन कहा सुनो सुल्ताना। यकदिन करत अहेर हिराना॥
जानों गुंग भयो केहि भांती। मैं तो निकट रहूं दिन राती॥
कै कछु देख मनै मां आवा। कै काहू कछु दै बौरावा॥

अब आयसु जो पावहीं फिरके करें अहेर।
काजाने जेहि देखते दृष्टिपरै केहि केर॥

तब सुल्तान साज सब दीन्हा। जसकेउ कहा तैसउन कीन्हा॥
सहस बीस भये संग असवारा। चले सबन दिखलावन सारा॥
पुरुष मीत सिगरे तेहि साथा। चरचहिंदृष्टि औ परखहिं माथा॥
पिरथम खेला खेल निरारा। जाल डाल मछली बहुमारा॥
पुनि सब पार उतरके आगे। छांड़े बन पांखी सब लागे॥
बिन पंखन पर पड़ै जो धारा। बचा न भाग सो मुर्ग पतारा॥
केहर बाज स्वान औ बाना। सब ऊपर पाँखिन के ताना॥

पाछे सब यक एकके एक एक भा काल।
मरन जरन पांखिन भयो महालोभभा जाल॥

सब अहेर जोबन दिखलावैं। वह सो हुलासन कितहू पावैं॥
कहुं सो सिंह मृगनपर छूटैं। कहूं सो बाज पांखपर टूटैं॥
कहीं सुपुरुष तुरी दौड़ावैं। कहीं सो कोई बान चलावैं॥
कोई जियत हंस धरलावैं। कोई खड्ग कंठपर लावैं॥
कोई छोट जीव ले भागैं। कोई मांस सरागन दागैं॥
कोइ कर होइ प्रानकर नासा। कोइ देख मन करैं हुलासा॥
कोइ कर ढारैं रक्त के आंसू। भूजैं कोइ परेवा मांसू॥

करत अहेर बीता दिवस मिला न हेरत सोय।
तबलग पावै खोजनहिं जबलग जाय न खोय॥

कठिन फंद बिरहा जिव केरा। केहि हेरे केहि करै अहेरा॥
गइ निशिबीति लोग सब सोवा। भइ अधिरात हंस तब रोवा॥
करे अंदेश बूझ मन माहां। कस वह देश जाउं मैं ताहां॥
कहां गई वैरिनि उपदेसी। गई प्रान तन रक्त न लेसी॥
अब कितजाउं मीत जेहि ठाऊं। हूं बिन दृष्टि पंथ कब पाऊं॥
ले गइ नींद नैन वह नीरू। लेगई भूख न रहै शरीरू॥
अबहीं जरूं मरूं पुन ताहा। केहि दिशि जाउं पंथ अवगाहा॥

जारे तन बिरहा अगिन भस्म करै सब देह।
दूसर और बिथा दई छाय जवाहिर नेह॥

कठिन बिरह जारे दुख जीऊ। ततखन बोल पपीहा पीऊ॥
बिरह बोल सुन बिरही जागा। पूंछन बचन पपीहन लागा॥
सुन चातक रे चातुर पांखी। तूकेहि सोग न लावत आंखी॥
तोका कौन बिथा अस बीती। तो पांखी कित लाग पिरीती॥
मोका अधिक जवाहिर नेहा। ताकी बिरह भस्म भइ देहा॥
बचन सो तोर आगि असिआवे। ठाढ़े देह सो अधिक जरावे॥

छुटिगा भोगत भोग जल पानी। जरिगा मांस गोदभई हानी॥

मोहिं जवाहिर प्रीति अस जारिकीन तन केह।
पंख पपीहा सत्य कहु तोहि लाग्यो कित नेह॥

पूंछत कस विरही मम बाता। जो दुख कहूं होय जग ताता॥
प्रीतम बिछुर रहे जो मोरा। तेहिके खोज फिरूं चहुंओरा॥
पपिहा भयो रटत पिउ पीऊ। नहिंपिउ मिला सो जरिगाजीऊ॥
तजिगा भोग भगत सब सारा। छुटिगा लोग कुटुम परिवारा॥
बावर भयो कंथके नेहा। रक्तो मांस रहा नहिं देहा॥
सब जग हेरि फिरौं बन माहां। मिले न पीउ रहे धौं काहां॥
छुटि गये माय बाप अरु भाई। छुटिगये लोक लाज गरुवाई॥

छांड़्यो कारन पीउ सब भयो पपीहा पांख।
रटतफिरौं पिउ२सदा पलक न लाऊं आंख॥

ऐस बिछोह डाह दुख मोहीं। दूजे देखि जरूं मैं तोहीं॥
तुम कैसे जो प्रेम वियोगी। जेहिसंग सहस बीसहैं योगी॥
चहो सो दरश जवाहिर केरा। छांड़ न सके राज जग केरा॥
सो दुबिधा मैं देखि डेरानी। दुबिधा करे जीउकी हानी॥
जो चाहो तुम दरशन देखा। दुबिधा छांड़ जगत कर लेखा॥
मन अपने मा करो विचारा। दुबिधा किये गयो को पारा॥
दुबिधा महँ जो जन्म सिराई। तौ पै प्रान अकारथ जाई॥

दुबिधा का मग छांड़िके एक पंथ तू साज।
कै निज लेउ जवाहिरै कै रूमी कर राज॥

सुन चातक पांखी बैरागी। जगत धंध महँ लायो आगी॥
मन मोरा एकहि ते लागा। दुबिधा धंध देहमे भागा॥
चहूं सो एक जवाहिर नाऊं। जान न जाय अहै केहिठाऊं॥

पंथ अपार पड़े नहिं सूझी। तेहिते गुंग भयों में बूझी॥
वहिकर चाह जहां सुन पाऊं। कलपूं माथ तहां पुन धाऊं॥
वन महं होय जाय वन ढूंढ़ों। जलमहं होय समंदमहं बूड़ों॥
होउँ पतंग आग महँ धाऊं। छांड़ों भवन जो दरशन पाऊं॥

मिलै जो भेदी सत्यकर लखों सो अस्थिर ठाउं।
पंखी हूं बावर भयो कहां फिरौं कित जाउं॥

सुनो हंस मैं करौं बखाना। जिसमें भेद गिरौती जाना॥
नेरे अहै जोति तोहि माहीं। तोरिक बांचौं वेहि परछाहीं॥
होठ हाथ शिर दंतन तोड़ा। अइ समंद जेहि और न छोड़ा॥
सात समंद मांझ तेहि केरे। मिले न वार पार केहु हेरे॥
जेहि की लहर न जाय सम्हारी। लेइ बहाय पृथिवी सारी॥
मगरमच्छ गोह घड़ियारा। तेहि बिच लूटैं सब बटपारा॥
अगम अथाह थाह जेहि नाहीं। हीरा सीप अहै तेहि माहीं॥

सुनो हंस मनबीच मां ऐस जवाहिर जोत।
काया मनो समंद बिच हिया सीप बुधि मोत॥

पै शठ कठिन शोच तेहि केरा। गयो हिराय जहां जिन हेरा॥
को अस पुरुष खोज तेहि लेई। को तेहि पंथ सूर पग देई।
को तिन्ह सांस बांधि के बोरे। को जिउ देइ जवाहिर ढूंढ़े॥
को अस परलौ लहर सम्हारी। को अस मगरमच्छ हठ मारी॥
को अस हाथ प्रान ते धोवै। को असभांति जो समंदहिलोवै॥
को अस पुरुष प्रेम जो खेलै। को तन बिरह आग महँ मेलै॥
को अस आस चैन तज देई। को जिउ बीन जवाहिर लेई॥

चहो जो आशा जियनकी दरस आश तजिदेउ।
गा तो प्राने भेंट दे खोज समंद महँ लेउ॥

सुन पांखी चातुर गुरु मोरे। केहि विधि पगटेकूं मैं तोरे॥
नेरे होय तो टेकूं पाऊं। चरनन लाइ चलूं तेहि ठाऊं॥
हौं बिन गुरु जो फिरौं भुलाना। केहिदिशि जाउं पंथनहिं जाना॥
तुम सतगुरु होय भेद बतावहु। करो मया मोहिं पार लगावहु॥
मैं तब तज्यौं चैन की आसा। जबने बिरह आन तन बासा॥
जीउ दिये जो दर्शन पाऊं। सहस प्रान तेहि पंथ लुटाऊं॥
छार भये जो पहुँचूं पारा। अबहीं जार करूं तन छारा॥

लेखा दीप पतंग कर पड़ो अग्नि महं धाय।
हेर तो लेउँ जवाहिरे प्रान जाय तो जांय॥

इहि विधि खोज कीन्ह तै पावा। जस तो आपन मर्म बतावा॥
जिन सतपंथ प्रेम वह खेला। सो जग छांड़ के भयो अकेला॥
लैलि काज जस मजनूं कीना। तनमन खोय प्रान तेहि दीना॥
औ फरियाद जो परबत काटा। शीरीं काज सो दीन्ह ललाटा॥
मेहर साह जो भयो बियोगी। दिलाराम के कारन योगी॥
तोहू पंथ निभर्म होय खेलो। कटक कन्धार भार महँ मेलो॥
जबलो पंथ एक ना होई। तबलो सिद्ध होत नहिं कोई॥

चहो जो दरश जवाहिरे जगते होउ निरार।
योगी हो तेहि खोज कर दैव मिलावनहार॥

कहि यह बचन जो कीन्ह जोहारा। गा पंखी उड़ि भा भिनुसारा॥
हंस सो हेर गहिय सो माना। कस पांखी केहि देश उड़ाना॥
रैन मांझ मोहिं भेद बतावा। भोर भये वह दृष्टि न आवा॥
सांचे शब्द जो कहिगा पांखी। दैगा भेंट होउं की साखी॥
अबहूं करों सो योगी भेसू। होय भिखार हेरूं सब देसू॥
चला चहे उठ प्रेम बियोगी। तबलों जाग पड़े सब भोगी॥

सेवकन देखि धाय कर गहा। औ अरदास जोड़ कर कहा॥
हम सेवक तुम जनम के जियत न छोड़ें साथ।
तुम जिन करो बिछोह अब प्रान तुम्हारे हाथ॥
सुन यह बचन हंस भा ठाढ़ा। बिरह घाउ हिरदे दुख बाढ़ा॥
गये मीत बैरी संग केरे। तजैं न संग रहैं नित घेरे॥
केहि बिधि इनते हुइहौं न्यारा। जो मोहिं पंथ मिलै उजियारा॥
देखसि संग न छांड़े कोई। तब असवार फेर भा रोई॥
साजे कटक भयो चहुं फेरी। पैठे बनमहँ फेर अहेरी॥
चहुंदिश बन छांड़न पुनि लागे। पांखी चौंक पड़े उठि भागे॥
खेलन लग बन मांझ अहेरा। सब सावज पंखी बन घेरा॥
उड़े पंख औ सावजे छूट आन सो बाज।
धावैं काल अहेर हुइ ज्यों मारन के काज॥
जो पांखी जेहि ठांउ उड़ाना। सो देखत बन तहीं बिलाना॥
जैसे पंखी तक उठि भागे। तम फिर पंखी छूटन लागे॥
तीतर जेहि दिश छिन हंकारा। तिधरे फेर बने मां मारा॥
सावज उड़ै न बाँचे कोई। सिंह श्वान पछाड़ हैं सोई॥
बन पंखी सब बन महँ मारे। जल पंखी पर जाल पसारे॥
क्यों गिर पड़े काल की फांसी। केहू का भा खेल औ हांसी॥
खेल कूद मां दिवस सिराना। तबलौं करते बाज उड़ाना॥
बाज उड़ाना हाथ ते बन महँ गयो हिराय।
खेल भुलाना सबै तब मन लागे पछिताय॥
जो उड़िगा अस बाज अमोला। तब तो हंस बोल अस बोला॥
कहा कि यह कहो जो सब कोई। बाज बिना कछु काज न होई॥
जबलौं बाज हाथ नहिं आवे। तबलौं और काज कत भावे॥

सेवकन आय सबै शिरनावा। जनि सुलतान करो पछितावा॥
बाज तें जो होय हुलासा। कोटि बाज आवैं तुम पासा॥
कह यह बचन सु सबै सिधाये। चहुंदिशि गये बनमांझ हिराये॥
जो जेहिदिश सो तेहिदिशधावा। खोज न मिला बहुरिनहिंआवा॥

जित उमराव अमीर सब पैदल औ असवार।
गये पंखी सब खोजने भूले बन मँझधार॥

भइ अलोप चहुंदिश असवारी। रहे निकट वे सेवक चारी॥
तिन ते बचन फेर अस कहै। हेरो बाज कहां धौं अहै॥
तब चारिउ चारिउ दिश धाये। हंस अकेल होन तब पाये॥
तब चारिउ ते भयो अकेला। हांका तुरी अंत कह खेला॥
भा निहार सब ते बैरागा। जेहि का नेह पंथ तेहि लागा॥
पहुंचूं प्रेम प्रान पर खेला। बन अँधियार सबों पै फैला॥
निकसा चार कोस बन मांझा। तबलग आनपड़ी पुन सांझा॥

एक सांझ कारी निशा दूजे बन अँधियार।
तीजे पंथो कठिन भा चौथे पड़ा पहार॥

चला सहूं परबत पर हांका। चढ़ा न तुरी तहीं पुन थाका॥
तो वहिं छांड़ दीन्ह तेहि ठाऊं। आप चढ़ा परबत दैपाऊं॥
धन बिरही जिन बिरह सम्हारा। चढ़ा शीश दै प्रेम पहारा॥
कठिन सो आग बिरहकर दांवा। धरे जो पांउ चले तेहि ठांवा॥
जरिगा नीर समंद भा खारा। जरो जो चांद भयो उर कारा॥
जरे बृक्ष पंखी भये कारे। धरती रेह भई तेहि जारे॥
गगन बिषम कांपन सो लागी। को सहसके बिरहकी आगी॥

कांपे स्वर्ग पताल सब धरती मेरु पहाड़।
कासम ताकर धन हिया सहे बिरहकी झार॥

चढ़ा हंस परवत उपराहीं। पांखी पवन तहां कोउ नाहीं॥
देखा यक पाहन उजियारा। जानो दर्पन पाट सवाँरा॥
बैठा बिरह जाय तेहि ठाऊं। सुमिरत एक जवाहिर नाऊं॥
बिरह आग ते जारे मांसू। झरना भये नैन के आंसू॥
आनन कँवल प्रान जस बासा। दहे आग तन मरे पियासा॥
बिरह आग ते गा कुम्हिलाई। रोवत मुरछ पड़ा मुरझाई॥
गा पुनि सोय तहीं बैरागा। छुटि गये केश पड़े भुइँ बागा॥

बैरागी ब्याकुल परम सोय गयो तेहिपाट।
उघरा बदन सुहावना दिपे सो दीपललाट॥

तेहिखन चार परी तहँ आईं। परिन केर सुल्तान पठाईं॥
आईं करन बिछावन जाहां। देखें मूरत सोवत ताहां॥
देखत दीप पतंग भई नारी। नेरे आइ भई बलिहारी॥
गोहीं परी देख वह राता। लागी कहन परस्पर बाता॥
ऐसा रूप न देखा कोई। दुसर और कहां जग होई॥
तब लग एक परी बिहसाई। यह के जोगै दई बनाई॥
आलमशाह चीन पति भारी। तेहि घर अहै जवाहिर बारी॥

जैसे निर्मल भान यह तैस चांद वह नार।
जोड़ी अहै सुहावनी लखो संग बैठार॥

तब यक परी कहारी गोई। सत यह वह का अहै सँजोई॥
पै वह ब्याह होतहै आजू। निकट बरात आय बरसाजू॥
जाई चंद राहुके हाथा। चंद सूर्य कब देखत साथा॥
वह शशि राहु देखि मुरझाई। होइ अंधियार देखि पछिताई॥
सो चल आज यही जस लीजै। चंदकाब्याह भानु संग कीजै॥
वह बर केर बरन लखि आहू। तस पहिराउ सो यहि पहिराहू॥

यह हस्तीपर देउ बिठाई। औ वहिका पुन लयो उठाई॥
होय ब्याह जो एकसँग जाव मांझ सो नारि।
चंद सुरज देखें तहां एक सेज बैठारि॥
बचन यही सबके मन माना। लीन्हउठाय सो सोवत भाना॥
चलीं लौंक बिजली की बानी। पलमा जाय चीन नियरानी॥
मंगलचार जो देखे ताहां। छिनयककाय छिपानी ताहां॥
परी एक कहँ बेग पठाई। देखन दुलह बरात क धाई॥
देखेसि आवत जैस बराता। हस्ती घोर पुरुष सब राता॥
देखिसि दूलह कर पहिराऊ। निरख सरूप रंग औ भाऊ॥
ते सब देख यहां का धाई। वैसी साज बेग लैआई॥
जसपहिराऊ दूलह कर देखिसि सब निरथाय।
वैसे लाई साज सब दूसर बरन न जाय॥
आनि हंस का सब पहिरावा। धनविधना जिन भाग बनावा॥
बांधी शीश सुहानी पागा। पहिरा बदन बियाहू बागा॥
सेहरा शीश महा उजियारा। औ गरहार गजाधर डारा॥
कलँगी जहँलग लाग गम्भीरा। भान शीश चमके नग हीरा॥
निर्मल जोत बरन रतनारा। भयो दूलह नहिं जाय निहारा॥
मोहीं परी सो रूप सवांरी। रहीं सो निरख ज्ञान असनारी॥
गई ठग मार मग मुख राता। ठगनचली ले भितर बराता॥
भये भान दूलह तबै परी छकित भई गात।
चलीं पाट बैठावने फेरब को सरझात॥
ले दूलह जब परी उड़ानी। मांझ बरात जाय नियरानी॥
देखें सब आवत बर साजा। राते हस्ति घोड़ अरु राजा॥
तेहि बिच बर हस्ती असवारा। आवत चला होत भनकारा॥

तहां परी ले पहुंची जाई । तबलग आंधीदई उड़ाई ॥
भयो जो अन्धधुन्ध अंधियारा । जरत बुझाय गयो मसियारा ॥
परे न हाथ पसारा सूझी । अपन परार जाय नहिं बूझी ॥
तबहीं उन औसर अस पावा । वहिका ले यहिका बैठावा ॥

लीन्ह कोउ दुलह उठायके दीन्ह दुलह बैठाय ।
जो जेहि लिखा लिलारमहँ सो पुनि मेटन जाय ॥

यहि विधि खेल कीन्ह करतारा । काहुन लखा सो चरित अपारा ॥
जो बर साज ब्याहने आवा । सो बनमहँ गहि बांह बिठावा ॥
बनबासी शोभा अमवारा । कै दूलह सर छतर सम्हारा ॥
केहू बगत भई केहु साथा । केहिकर छत्र फिरा केहिमाथा ॥
धनि कर्तार जगत के राजा । जो तो कीन्ह सबै तो छाजा ॥
एकै घड़ी रहा अँधियारा । पुनिगा बीत बरी ममियारा ॥
चला भानु चढ़ि मांझ बराता । जानोभा निशिमहँ परभाता ॥

देखि बराती बरन सब जहँलो संग बरात ।
आज दुलह कस देखिये है कछु अचरज बात ॥

हंस बैठि हस्ती तब जागा । अचरज खेल सो देखन लागा ॥
देखा हरसेहरा रतनारा । देखा गरे गजाधर हारा ॥
देखा अंग बियाहो बागा । देखा शीश सहानी पागा ॥
देखा कटक बराती साथा । देखा छत्र फिरै जो माथा ॥
देखा जरत बरत मसियारा । देखा राग रंग झनकारा ॥
लखि शोभा मन करत बिचारा । कहि अस खेल कीन्ह कर्तारा ॥

दूलह मोहिं सवांरके केहिकी अहै बरात ।
की सपना कीसो मुख यह होइ कस परभात ॥

यही जो सोच करत मनमाहीं । है सूं कहि सपना यह नाहीं ॥

सोवत हुइहौं कहुं बन माहां। अबधौं जानु बिवाहैं काहां॥
वह अचरज यह खेल भुलाना। जग वहके पुनि रूप भुलाना॥
चातृक मेल दीन्ह करतारा। ज्ञानिन केर ज्ञान अस हारा॥
सबै बराती रूप बखाने। पै निज भेद कोउ नहिं जाने॥
कहैं कि परसन भा करतारा। जो करदीन्ह रूप उजियारा॥
पिता देखि अधिकौ सुखमाना। देखै तैस रूप रंग थाना॥

मोहे करत हुलास सब आये नगर निरान।
निकसेलोग जो नगरके आयमिले अगवान॥

ले सो बरात नगर मा चले। बजन लाग सो बाजन भले॥
पैठे आय नगर मँझियारा। हाट बाट होयगा उजियारा॥
देखै लोग नगर का धावा। स्वर्गलोग सब देखन आवा॥
चढ़ि धौराहर देखैं नारी। शब्द चीर खोजैं मन हारी॥
बहुरि चढ़ी जो मँदिर सयानी। लखी बरात बार नियरानी॥
सखी देखि मन करैं बखाना। आयो बर निर्मल जस भाना॥
शब्द जो देखि दुलह बिहसानी। भा तन जीउ रूप पहिंचानी॥

देखिसि दूलह हंसहे मनमें भयो हुलास।
धाई उमँगी कोट ते गई जवाहिर पास॥

बैठि बियोग सोग मन मारी। चहै सो प्रान दीन्ह बलिहारी॥
तबलो शब्द जो बात सुनायो। सुन धन चंदभान पिउ आयो॥
वही सो हंस रूप पतिवारा। होय दूलह आयो दरबारा॥
प्रकट भयो जो भाग तुम्हारा। तौ वह किन्ह आन्यो कर्तारा॥
सुन सो बचन चेत भइ गोरी। पैहैं सत्य न मानी भोरी॥
सुनो शब्द यह बात अपारा। कहँ अस योग करै करतारा॥
कहां वै बसें रोम के माहां। कहां बन दूलहभये पुनि काहां॥

लागे मोह अपार अति शब्द कहे जो बैन।
तब निहचो मैं जानहूं जब देखूं भरनैन॥

चल धन अब दिखलावहु तोहीं। तब तुम देख कहो सत मोहीं॥
लै धौरहर चढ़ी सो गोरी। शशि परगट भई जोत उजेरी॥
देखे लाग झरोखे बारी। शब्द दिखावे बांह पसारी॥
अब लख बार जो आपन पीऊ। अहै सहूं देखो भरि जीऊ॥
देखो रूप जगत उजियारा। सौहैं दृष्टि न जाय निहारा॥
कहँ यहि योग जगत मा कोई। छूट यह हंस और नहिं होई॥
सातो द्वीप हेर मैं आयों। यहके बरन न दूसर पायों॥

देखबार पिउ आपनो दई दीन्ह तोहिं भोग।
और बरात जो देखहीं सबै कोउ लै लोग॥

देखा धन पीतम भरि आंखी। दूजे दीन्ह शब्द जो साखी॥
जस सपने मा देखिसि पीऊ। तस देखिसि निहचोभरजीऊ॥
देखिसि बरन रूप निरताई। हुलसे अंग न हिये समाई॥
हुलसे नैन प्रेम रंग माते। हुलसे अधर अमीरस राते॥
हुलसे पियर बदन भई राती। हुलसे दशन बिजयकी भांती॥
हुलसे कुच तेहि हिय उपराहीं। हुलसा उर नहिं हार समाहीं॥
हुलसा बदन मदन तन ताका। हुलसा प्रान पाप दुख भागा॥

हुलसे चारु पुरुष बड़े हर्ष न हृदै समाय।
एक एक हुलसे सभी सब दुख गयो हेराय॥

लखि पिउ बारि गई घरमाई। हिये हुलास भरी सुखदाई॥
आइ बरात जो पहुंची बारा। लागा होन द्वारका चारा॥
नखत बरन सखि मन परगासी। मारे कीर लीन्हे लौलासी॥
अक्षत कर कंचन बरसावैं। मंगलचार नारि सब गावैं॥

मोहीं देखि सखी बर लोना। रहीं पुरुष ठग जानो टोना ॥
हारें कूद खेल अरु हांसी। रहिगई हाथ लिये लौलासी ॥
रहिगईं ठाढ़बार सब नारी। फेर सौबार आय चौपारी ॥

बैठक महा अनूप जो चतुर रची चौपार।
नखत जोत तहां लगी सब छिपी जोत संसार ॥

तेहि बिच राखा पाट सम्हारी। बैठ बरात चहूं दिश सारी ॥
बैठे दुलह सिंहासन आई। चहुं दिश लोग रहे निरखाई ॥
लखि बर रूप चौंक अस जागे। मनमहँ आप बिचारन लागे ॥
भूले लोग सबै अतिज्ञानी। कोउ नहिं सके मर्म पहिचानी ॥
कोउ कहे बर दूजा होई। कोउ कहे दूजा कत सोई ॥
कोउ कहे रूप कहां अस पावा। कहे कोउ करतार बनावा ॥
कोउ कहे पूछे को आई। कोउ कहे का हम बौराई ॥

देखत नारी तहँ ठगीं ठाढ़ सभा सब साथ।
देखे जो नर ज्ञान ते देह सहूं मुख हाथ ॥

यहि बिधि मोहि रहे नर नारे। का साथी का देखनहारे ॥
बैठे लोग सोचत सब कोई। लाग्यो ब्याह चार पुनि होई ॥
काजी महा जो पंडित ज्ञानी। बैठा निकट दुलह के आनी ॥
अमृत थार धरा भर थारा। पान और फूलन के हारा ॥
यक बसीठ दुइ साखी आये। शशि के बचन सरह में लाये ॥
कीन्ह जोहार जो नेरे आई। प्रेम की बात सो बैठ सुनाई ॥
गुप्त भेद सब कहा जो काना। करि परनाम रात भा भाना ॥

जोड़ी गांठी प्रेम की मन मानिक तेहि पाहिं।
छोड़ी जाय न अब कह्यो दोउ जगत के माहिं ॥

तब नरगिश सब भेद बतावा। भया ब्याह औ बाज बधावा ॥

होन लाग तब मंगलचारा। अस्त अस्त बोला संसारा॥
सुफल घड़ी जो भयो बिवाहू। भयो हुलास नगर सब काहू॥
नेगिन आन जो दीन्ह असीसा। जिये साह सुत लाख बरीसा॥
तब सुलतान दान अति कीना। द्रव्य अनेक नगर महँ दीना॥
नगर मँदिर अरु बसे बराता। भयो अनंद भाउ नगराता॥
फिरा जो पान अमीरस बासा। भई हुलास औ बुझी पियासा॥

भयो ब्याह सायत सुभग दोउ दिश भयो हुलास।
पुनि समाज भोजन भये बैठ लोग चहुं पास॥

बैठे लोग छतीसो जाती। जोजेहि भाँति सो तेहि तेहि पांती॥
पांति पांति से सबै बिठावा। औ सबके पुनि हाथ धुआवा॥
जहँलग पुर अमीर उमराऊं। सेवक आन भये तेहि ठाऊं॥
आने लोग सो भोग सुबासा। यक यक बरन सहस परगासा॥
भोजन परस धेरे बहु तोरी। जन जन आगे दश दश जोरी॥
धरे भोग जो सबै बखानी। आन स्वाद चौंसठ बिधि आनी॥
दही दूध पानी रस राखा। पुनि चाखर जस सुना न चाखा॥

राखे भार सम्हार के सब रस प्रेम मिलाय।
नाउ निरञ्जन सुमिर के लाग सबै जो खाय॥

लागे लोग भोग सब खाई। बासहि ते गये पुरुष अवाई॥
यक यक कौर कोट रस चाखा। छकित भये रस जाय न भाखा॥
सबै लोग रस भोग समाना। हंस सो अचरज खेल भुलाना॥
हाथ धोय पै हाथ न बोरा। काधौं होय ब्याह के भोरा॥
यह सपने कर अहै बिवाहू। सपने साज रहा नहिं काहू॥
का अब भोग करूं निश माहीं। जो पै भोर हाथ मह नाहीं॥
यही बिचार सो भोग न खावा। तबलो नेगिन थाल उठावा॥

सब काहू भोजन करे जहँ लौं संग बरात।
पुनि सो हाथ धोवाय के फिरे पान रसमात॥
सबै जिवाय सो दीन्ह अवासा। भये सो लोग सजत चहुंपासा॥
हस्ति घोड़ दीन्हे बहु दाना। रहा न मांस बेस भूलाना॥
कोटिन जित आये असवारा। पलमहँ सब कहँ दीन्ह अहारा॥
धन सुल्तान जो साज समारा। तिन अनेकन घरा भंडारा॥
महाहुलास छतीसो लोगू। करे बिश्राम खायके भोगू॥
पुनि जो सेज सँवार बिछाई। औ दूलह कहँ मँदिर बुलाई॥
साजे नखत लेन को आगू। औ शशिकर भाग सोहागू॥
दाई धाई मँदिर कर निकसी करत हिरास।
भीतर सेज सँवारिके गई दुलह के पास॥
कहा कि ऐ सुल्तान दुलारे। उठि चल भीतर मँदिर हमारे॥
जहां अहै कैलास तुम्हारा। तेहि पग दियो चलो सम्हारा॥
उठि दूलह तबहीं पग धारा। चला सो मंदिर भा उजियारा॥
भीतर पौर चहै पग दीन्हा। हुलसत धाय सखी गहिलीन्हा॥
नखत सखीं शशिकी परगासीं। करै हुलास भान सँग हासीं॥
आज सूर बस भयो हमारे। तस शशि राज निकट हमवारे॥
जहां चंदकी फिरै दुहाई। तहां भानकी कौन बसाई॥
करत जो कौतुक खेल सब नखत सखी चहुँ पास।
लयेसो भामिनि दुलहका गई मांझ कैलास॥
बरनूं का कैलास अनूपा। अचरज रैन मांझ जनु धूपा॥
कंचन ईंट कपूर गिलावा। चुन चुन रतन अनूप बनावा॥
नगअमोल चमकैं ज्यों तारा। छिपैं दीप उनके उजियारा॥
मलयागिरि तहँ लाग सुबासा। हुइ अरघान रहीं चहुं पासा॥

तहां सोनार सो चतुर सोहाई । तेहि बिच रानी सेज बिछाई ॥
रातापलंग रात पहिरावा । राता पट बहु भांति बनावा ॥
राती सेज सो पाटी राती । राते बंद कसे बहु भांती ॥
राता मँदिर सुहावना राती सेज सुठांउ ।
रातादूलह भान रँग धरासेजपर पांउ ॥
भान सेजपर बैठा जाई । सखी सम्हार चंद पहँ आई ॥
जहँ लौं मंदिर की बर नारी । लागी सबै सवाँरन बारी ॥
खञ्जन नैन जोअञ्जन दीन्हा । बिरहिन बेष प्रेम कर कीन्हा ॥
केश सवाँर जो गूंधे चोटी । नागिन जान लई मन लोटी ॥
सेंदुर माँग रचा रतनारा । मानो खड़गधार मधि धारा ॥
टीका कनक जो दीन्ह लिलारा । दुइज पाट जानूं धौं तारा ॥
कै असनान पहिर पुनि जोड़ा । भा सोहा जग रात अजोड़ा ॥
नखत सुकर सोहे तहां औ मुख रात तँबोल ।
करनफूल बरनूं कहां सरवन पात अमोल ॥
गरयें मयूर चतुर रंगकारी । कंठ माला सोहे पिचलारी ॥
हार नखत गूंधे गज मोती । तिन ऊपर नखतन की जोती ॥
बाजूबंद कर कंगन कलाई । नौगिरही बहु रतनजड़ाई ॥
राती कर मेहँदी रंगभीने । कनक अंगूठी रात नगीने ॥
ऊपर बाँह रोमावलि आई । कंज नाल जनु सुघर सोहाई ॥
गुजरी जोरा रतन जड़ाऊं । पायल बाजन सोहे पाऊं ॥
अभरन पहिर ठाढ़ भइँ गोरी । लहूंकि जनु चपला चहुँओरी ॥
बारी अभरन पहिर सब भइ चौगुन उजियार ।
छिपीं अप्सरा इन्द्र की और जगत की नार ॥
सिंगार सोलहों पूरन नारी । औ अभरन सब साजे बारी ॥

बारा अभरन जो पन कीन्हा। मोहा जगत प्रान तेहि दीन्हा॥
मोहीं नखत सखीं सब पासा। मोहा चांद औ सूर अकासा॥
मोहा इन्द्र लोक कर राजा। छिपीं अपसरा मोह सलाजा॥
मोहा मेघ घटा लै पानी। मोहा पवन बेद अरघानी॥
मोह पतंग भवँर औ शेशा। भेदी मास बेध के केशा॥
मोहा स्वर्ग भूमि पातारा। जिउ तहँ बसा सून संसारा॥

मोहा पानी पवन सब धरती और अकास।
सारे जगका मोहका चले कंथ के पास॥

चली जवाहिर जो पग दीन्हा। हस्ति लजाय धाय बन लीन्हा॥
उठा शब्द पायल झनकारा। छिपा नैन सर मंडल तारा॥
नखत लजान देख गजमोती। छपिगा शशि लिलारकी जोती॥
केश देख के शेश लजाना। नैन देखि बन मृग लोभाना॥
भौंयें देख घन धनुप लजाने। दशन देख के बीज लुकाने॥
कोकिल कुहक सुनत भई लाजा। देखत गर मयूर बन भाजा॥
छिपी सो नाल भुजा घन देखी। केहरि छिपे लंग पन पेखी॥

कदली कादर जंघ लख छिपो रूप अभिमान।
जबहीं अभरन साज के चली जवाहिर रान॥

नखत सखिन घेरी चहुं पासा। आई शशि लीने कैलासा॥
जहँवां दुलह भान सुलताना। देखिमेज मन कीन्हेसि ज्ञाना॥
लखी सो चतुर सेज सोनारा। तबलौं शशिआनी लेतारा॥
आप सहूं कीना जब बारी। सखी छार सब मंदिर सिधारी॥
आई निकट सेज जो गोरी। मोहा भान सो देखा जोरी॥
वह वह रूप सिंगार लोभाना। वहवह के मन माहँ समाना॥
गई जब मोहि देखि पिउ ओरा। पिउमन देखि सो भयो चकोरा॥

मोही धन दरशन पिया पिउ मोहे धन रंग।
मोहो मन दोनों तहीं बैठारे यकसंग॥
छिन इक मोह रही जो बारी। भइ पुनि चेत तौ ज्ञान सम्हारी॥
देखिसि कंथ न पूंछी बाता। जानेसि सोइ गयो मधुमाता॥
तबहीं शीश चरण ले लावा। चरण टेक धन कंथ जगावा॥
कँवल छुवत जाग्यो सुलताना। देखत कँवल भँवर लोभाना॥
तब गहि बांह सेज बैठाई। मानो किंशुक डार ओनाई॥
प्रथमैं हंस गही जो बाहीं। तबहीं धन हुलसी हियमाहीं॥
बैठी चंद भानुके संगा। पूंछै लाग बात दै अंगा॥
कहो भेद आपन पिया नाउँ ठाउँ सब बात।
अहो सो तुम केहिके कुंवर केहिकी अहै बरात॥
सुन धन कहूं भेद सब बाता। जो कुछ कीन्ह औ दीन्हबिधाता॥
हूं बुरहान शाहकर बारा। देश मोर सो बलख बुखारा॥
हूं सुत शाह हंस मम नाऊं। रहूं सो रूम शाह के ठाऊं॥
तहँवां आन भयो सुलताना। सातौद्वीप जगत मोहिं जाना॥
तेहि सुखमा सपने तोहि देखा। तबते भा बावर के लेखा॥
तब लो पांखी एक परेवा। नाऊं शब्द ज्ञान सहदेवा॥
सो बनगयो परेवन साथा। बैठा जाय तहां मम हाथा॥
तैं शठ कीन्ह भिखार मोहिं कीरत बरन तुम्हार।
प्रान काढ़ लाई तहां छार छार मोहिं डार॥
ले वह प्रान सो तुम पहँ आई। तुम अस निठुर न फेर पठाई॥
तुम तेहि हाथ न कियो संदेशा। अवधबीत मोहिं भयो अंदेशा॥
हेरत पंथ सो प्रान हेराना। बावर भयों खोयगा ज्ञाना॥
चल्यो भिखारी छार चढ़ाई। सिगरो रूम गयो बौराई॥

तब सुल्तान बहु रूप दिखावा। अंत मोहिं बनमाहिं पठावा॥
रैन तहां सो लीन बसेरा। भइ अधरात पंखि यक टेरा॥
तैं पांखी मोहिं भेद बतावा। दे उपदेश सो पंथ लगावा॥
चहूं कि होउँ भिखार तव संग न छांड़े कोय।
तिउ तिउ आगी बिरह की दाहे अंग समोय॥
अंत मोर गा बाज हेराई। तेहिके खोज कटक सब धाई॥
तब सब ते मैं भयो नियारा। चल्यो नांघ बन मेरु पहारा॥
तेहि सो सांझ परी निशि कारी। तुरी छांड़ि तब चढ़ी पहारी॥
सुमिरत नाउँ तोर हियमाहीं। सोय गयो पर्बत उपराहीं॥
देखों जाग सो चरित अपारा। कामैं कहौं चरित करतारा॥
किन मोहिं प्रान हस्ति बैठावा। किन तुम ते धौं ब्याह करावा॥
नहिं जानों केहि फेरो छाता। जानन पड़ केहि केर बराता॥
जानन एको जाय कछु कहां गयो सत बात।
प्रान लाग मम तुम्हीं ते दैव मिलावा गात॥
सुनो नाथ बिधि पूरे आसा। जो ममभाग लिखा तुम पासा॥
नाहिं तौ मोर जात अब जीऊ। पुनकत भेंट होत अस पीऊ॥
जेहि कर्ता मोहिं चहा जियावा। तौ तुम काहँ दुलहकर लावा॥
जब ते शब्द आन के कहा। तबते प्रान पास तुम रहा॥
कहूं कि उड़ूं जाय पिय ठाऊं। पै काकरूं पंख कहँ पाऊं॥
पठऊं शब्द सो जान न पाई। माते मोर बांध बैठाई॥
जबते हार पड़ी बंदखाना। पुनिको जाय भेद नहिंजाना॥
हौं पांखी बिन पंख की शब्द पड़ी बँदखान।
जखोंशोच नित तेहि सन रहा कौन घट प्रान॥
बावर भये कंथ तुम लागी। अभरन अंग भये सबआगी॥

भोग विलास गयो सब छूटी। पियाके पंथ गई धन लूटी॥
निशिदिन रटूं कंथ तो नाऊं। परगट गुप्त रहों जेहि ठाऊं॥
सुमिरत सोय गयों यकराती। सपने महँ देख्यों यहि भांती॥
तुम सपने मां कंठ लगायो। जागपरो तब दृष्टि न आयो॥
देख आज मग करूं बिशेखा। होय न फेरि सपन कर लेखा॥
यही शोच कांपै मम जीऊ। भोरभये बिछुरै जनि पीऊ॥

अब मोहिं आन बियाहके गह्यो पोढ़के हाथ।
दै बिछोह जनि मारियो और निबाहो नाथ॥

सुन धन सत सपना यह होई। केहिबिधि कहूं और जो होई॥
सपने राज सो बहु तन कीना। अन्तदिवस कर काहु न लीना॥
हतो कहां वह कठिन पहारा। देखूं बैठ बीच सूनारा॥
हतो भेष में बिरह बियोगी। अब दूलह तो दर्शन भोगी॥
तेहि जानूं बिछुरब सब भोरा। कित मैं जाउँ कहां सँगतोरा॥
मैं तोहिं आज लखो निशआजू। होई यह सपने कर राजू॥
सुन तू नांउ जो भोग हिराना। मिल बिछुरै जानो निजप्राना॥

यही शोच मोरे मन बिछुरै जिन भिंसार।
अब मिलिके बिछुरन भयो कैस करै कर्तार॥

सुन धन बचन कांप मन माहां। बिछुरन को दुख देखे काहां॥
जो भोरै यह सपना होई। तो निहचूं माने कत कोई॥
देहु कंथ कछु मोहिं निशानी। जो पुनि बहुरि जाय पहिंचानी॥
लियो मोर तुम कनक अंगूठी। राखो प्रान सो आपन मूंठी॥
तब पिउ छाप नारि कहदीना। धनकर छाप आप कर लीना॥
पहिर जो छाप ठाढ़ भइ गोरी। अब अर्दास एक पिउ मोरी॥
तुम मोहिंलाग जो तजोअहारा। सोतो संयोग कीन्ह करतारा॥

अब आयसु जो पावहूं ले आऊं कुछ भोग।
मोरहि होय बिछोह जब कत जीऊं संयोग॥
सुनधन मैं दर्शन तो चाहा। सोभा दरस परस मोहिंलाहा॥
तन मन ज्ञान सबै तोहिं मोहा। अबछिनकहनहिं चहूं बिछोहा॥
पै तो बचन जात नहिं टारा। जो इच्छा सो देउ अजारा॥
जब धन पियकी आज्ञा पाई। निकस मँदिर ते बाहर आई॥
देखी सखिन न जागे कोई। जो जेहि ठांउ रहे तहँ सोई॥
पैठी आप अवासे माहां। लीनी बस्तु भोगकी ताहां॥
पायो तहँ चावर सुखदासा। लीन कंद जो अमृत बासा॥
कमल चरण नहिं भुइँ धरा गडुवा हाथ न लीन।
तैं बिरही पिउ कारने योग यतन अस कीन॥
बटुला तीन तहां औंधावा। तापर एक धोय बैठावा॥
काढ़ा अंग ते ब्याहू जोड़ा। तैं धर कंवल तेलमहँ बोरा॥
जल गुलाब कर अदहन दीना। कपड़ा चार आंच सो कीना॥
तेहिमा कंदघोल के डाला। औ सुखदास ते खाल उतारा॥
प्रेम खालधन भोग लगावा। अमृत मीठन वह सरपावा॥
तापर घृत सो बास मिलावा। कनक कटोरी काढ़ सिरावा॥
खोरवा लीन हाथ के बारी। जल गुलाब लीनाभरिझारी॥
एक हाथ भोजन सरस दूजे हाथे नीर।
लीन्हे प्यारी प्रेमयुत चली कंथके तीर॥
आई धन प्रेम के पासा। आगे धरा सो भोगबिलासा॥
लीन उठाय आप कर झारी। पिउ के हाथ धुवावे बारी॥
पुनि आंचर ते बायु डुलावे। पै पीतम नहिं कौर उठावै॥
कहै कि भोग करौं यक साथा। पुनि असयोग निरंजन हाथा॥

कंवल कहा मैं दासी तोरी । पिउ परसाद आश मन मोरी ॥
तब गहि बांह कंथ बैठावा । औ धन के गहि हाथ धुआवा ॥
सकुचे नार न कौर उठावै । तो पीतम निज हाथ खवावै ॥

बिनवै कमल सो हाथगहि करोकंथतुमभोग ।
भोर सो हाथ निरंजन दरस परस संयोग ॥

तब पुनि हंस भोग रस खावा । कोटिन रस तेहि चाखतपावा ॥
जो रस प्रेम गुप्त धन राखा । जो रस जाय कंथ पुनि चाखा ॥
गयो अघाय लेत अरघानी । पुनि मांगा धन ते पिय पानी ॥
तब धन प्रेम पियाला लीना । सब रस नाय कंथ कहँ दीना ॥
पिया जो हंस प्रेम जल मीठा । खुलिगा हिया जन्मसुख डीठा ॥
जो कैलास मांझ जल कहा । तेहिते अधिक प्रेम जल लहा ॥
जस तेहि बिरहिन जार शरीरा । तस पावा वे शीतल नीरा ॥

काया दही जुड़ान तब कंवल पानदे हाथ ।
तप कीना जाहे कारने भइसेवक तेहिसाथ ॥

पीतम भोग अघाय जो खावा । तब धन पियके हाथ धोवावा ॥
खुरवा ढार पलंग तरडारा । खोला धन तब पान पिटारा ॥
खोल पान धन पिउ कर दीना । बिहँसत पान कंथ पुनि लीना ॥
कहा कि धनसुन प्रथम परीती । सेवा जीत प्रान तुम जीती ॥
मीठ हाथ तुम दीन मिठाई । अब यह भोग न जन्म भुलाई ॥
देखि कमलकर शीतल पानी । यह कामा सो आज जुड़ानी ॥
मैं तुम प्रेम प्रान असपावा । सब कैलास हाथ जिनआवा ॥

तुम तो जीता प्रेम सब लियो जीतकरप्रान ।
अबतो आवो सेजपर हूआ चहत बिहान ॥

बिहँसी नारि सुनत असबाता । आपे कमल अहे तुम पासा ॥

धीरज धरो कंथ मनमाहीं। अबहीं तोर जात कछु नाहीं ॥
सब जानो की मालनि मोरी। आपन बस्तु लेत का चोरी ॥
का भा मोर होत रस भीना। आपन बस्तु चहा तब लीना ॥
अब छिन यक मैं वायु डुलाऊं। के शीतल मैं पिउ पहँ आऊं ॥
धनके बचन हंस जो माना। सोवन सेज तबै शहसाना ॥
छिन यक नारि डुलायस वाऊ। पुनि लागी करचापन पाऊ ॥

हंसजोपावा सुखअधिक लाग सोवैअधिकाय।
खावा भोग अघायजो नींद छिनकतस आय ॥

देखसि कंथ लाग अलसाई। तब धन बिहँसि सेजपर आई ॥
सोई लाय कमल दै बांहा। तबहुँन चखखोली पुनि नाहा ॥
गई सो लाग हिये लपटाई। जेहि बिधि फूलनवाससुहाई ॥
भानहिमिली चन्दउजियारी। होइगइ एक न जाय निहारी ॥
जानो घिरत दूध के माहीं। मेहँदी रंग लखे कोउ नाहीं ॥
जोबन दोउ नारिके ऊभे। दोनों हिये कंथ के चूभे ॥
तहूं न कंथ उठा पुनि जागी। तब धन संग सो सोवनलागी ॥

धन हियलाय समायके तहूं न जागेनाह।
तबसोई धन विरहिनी दे प्रीतमगरबांह ॥

जब शशि सेज भान की सोई। देखि सो परी रही बुधि खोई ॥
देखें चन्द सुरज की जोरी। रहीं ठाढ़ जनु ठगी ठगोरी ॥
देखें लोग खेल सब राती। कहें बिछोह करें केहि भांती ॥
एक कहे की दुहूँ उठाऊं। जो बिछुरे हाथे जिन पाऊं ॥
एक कहे अब ऐस न कीजे। जो हत्या बहुतन की लीजे ॥
जो पै हंस रहा यह पासा। हम साम सब होय निरासा ॥
जो ले चलें जवाहिर साथा। तो यहँ कटैं कोहि दशमाथ ॥

अब सोई मत कीजिये जेहिहत्यानहिं होय ।
बिछुरे ते पावैं मिलन परमिल सके न कोय ॥
तब यक परी कहारि गोरी । हुई कठिन जो बिछुरे जोरी ॥
पै अब होन चहत भिनसारा । परखे लोग सभी संसारा ॥
वेग हंसका लियो उठाई । वह परबत पर दियो सोवाई ॥
औवह पुरुष मंदिर लेआवो । तबहीं धनका वेग जगावो ॥
देखें जाग करैका बारी । जो जिय देव तो लेव सम्हारी ॥
यह तौ खेल देख सब लीजै । तबहिं पयान देश का कीजै ॥
अंतस रोय सबै फिर जाई । जो जेहिकर सो तेहिपहँआई ॥
चन्द बिआहेभानुकह बिछुरे जो परभात ।
राहु छाँह कितपाइये गाभाकोप बरात ॥
यही बात सबके मन भाई । सोवत हंस क लियेउठाई ॥
लीन छोड़ाइ जो बांह मरोरी । बिछुरे कनक पदारथ जोरी ॥
लै पुनि बांह गही पलमाहीं । पहुंची वह पर्वत उपराहीं ॥
लीन उतार बिआहू बागा । दीन सबही पंथ बैरागा ॥
वही ठांउ ले दीन सोवाई । जहां आदि सोवा वह आई ॥
रहा जो मेरु हिमंचल छोड़ा । सोवत अंगलाग तहँ जोड़ा ॥
पड़ा चौंक तहां सोवत जागा । देखे मेरु वहीं बैरागा ॥
गाठगलूटा मारज्यों चले आंसूसर टूट ।
कहांसेजकैलास वह कहां प्रान वह छूट ॥
सपने राज विलस के जागा । सुमिरि २ मन रोवन लागा ॥
कहँ छांड्यों मैं वह कैलासा । कहँ वहजोतभोग जेहिपासा ॥
कहां गई वह निशि उजियारी । कहँ वह सेज कहां सो नारी ॥
कहां दरश वह परस सलोना । कहां सुहाग मिले वह सोना ॥

कहां अधर वह अमृत मीठा। कहां सो दरश दिये चक दीठा॥
कहां शब्द वह कोकिल बोला। कहां कमल वह हाथ अमोला॥
कहां भोग वह प्रेम रसाला। कहां पान वह प्रेम पियाला॥

कहां सुसूरत प्रान वह भोग सर्व जेहिहाथ।
सत्य भयो सपनासकल रहा न एको साथ॥

यह सपना पुनि जाय न कहा। हत्यो सत्य पै हाथ न रहा॥
जो सपने फिर मिलत शरीरा। तौ मुख मांह रहत कस पीरा॥
जो सपने महँ भोग बिलासा। तौ काया कत जात न पासा॥
जो सपने महँ देत अँगूठी। तौ कत रहत रैनि मोहिं मूठी॥
सो सब अहै जो वह मोहिंदीना। केहि हत्यारन यह छल कीना॥
यह सपना अब केहि ते कहूं। केहिदिशि जाउँ कहां थिर रहूं॥
राखौं कहां ये कनक अँगूठी। दीन्ह सँभार छार यक मूंठी॥

भई अँगूठी आग सो फूंकदीन्ह वह लोक।
लाग्यो जाख्यो जगतसब उठी विरहकी झोंक॥

जरा विरह कर अपन पराना। दग्धा तन मन पंख उड़ाना॥
सुमिरि गिरा पर्वत उपराहीं। मूरछ परा प्रान ज्यों नाहीं॥
टूटैं आंस रक्त के राते। पड़ैं सो लोक बूंद भये ताते॥
विरह आग सुलगा तन दूना। जर अमीरु पाहन भा चूना॥
बन खंड जरे मृग भये कारे। पात झरे औ पंख सिधारे॥
जरे मांझ जल लागो दाऊं। भूमि जरी सब ठाँउन ठाऊं॥
जरा सो मगन भयो जरिकारा। जरा शेष गा पैठ पतारा॥

सब जग आगी छायके परी पंख पर लाग।
उठीं तबहिं मोहब्बत कर चलीं चीनदिशभाग॥

करत विचार परी गइ ताहां। जहां दिनपूर बिअवन मांहा॥

चित्र बन देखि सो करै विचारा। कहँ कर्तार आन मोहिं डारा॥
कहां गई मम कटक बराता। कहँ गयो छत्रपाट संग सता॥
कहँ गये मीत लोग सब साजू। कहँ गा देश नगर औ राजू॥
येही शोच करे मनमाहीं। तब लों पसी लीन गहिबाहीं॥
लीन उठाय होत भिनसारा। दीन उतार होत मँझधारा॥
निकट जो सेज ठाढ़ वह कीना। तबहिं जगाय नारिकहँ दीना॥

धन सोवत जागी जबै कंप उठी मन माहिं।
देखे नैनजोखोल वह कंथ सेज पर नाहिं॥

दहक उठी कांपी मन माहा। सपना सत्य भयो नहिं नाहा॥
गई झुराइ ठाढ़ मुरझाई। सरवर सूख कमल कुम्हिलाई॥
देखा निकट ठाढ़ कोइ दूजा। बरन वही पै रूप न पूजा॥
तब मुख फेर जो पूंछा बारी। को तुम अहो मांझ सो नारी॥
देवर तबै खोल चख देखा। भयो पतंग दीप कर लेखा॥
धन सो देखि कांप मनमाहीं। सूख गई मम गहै न बाहीं॥
रोय उठी कोकिल कंठ बोली। पठइन धाइ सखी पट खोली॥

धाय संभारा सबन मिलि लीन हिये महँ चांप।
तबहूं लरजे शशि मनहुँ राहु विलोकत कांप॥

हिये लाइ समझावैं नारी। कस कांपै तोहि राज दुलारी॥
पीउ पाय नहिं रोवै कोई। जिव जोबन सब ताकर होई॥
पीउ के चरन शीश पर लीजै। मांगे प्रान रहस कर दीजै॥
तब धन रोय मार के ढारा। कहँ पीतम जिउ मांगनहारा॥
कहँ पिउभान रह्यो जेहि पाहां। कहँ वह कंथ गही यह बांहा॥
पीउ सेज ते भयो अलोपा। यह को आय राहु हुइ कोपा॥
बेग मंदिर ते दियो निकारी। जिन मोहिं दियो लाय यहकारी॥